हंस

वार्षिक पत्रिका - 2021

हंसराज कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

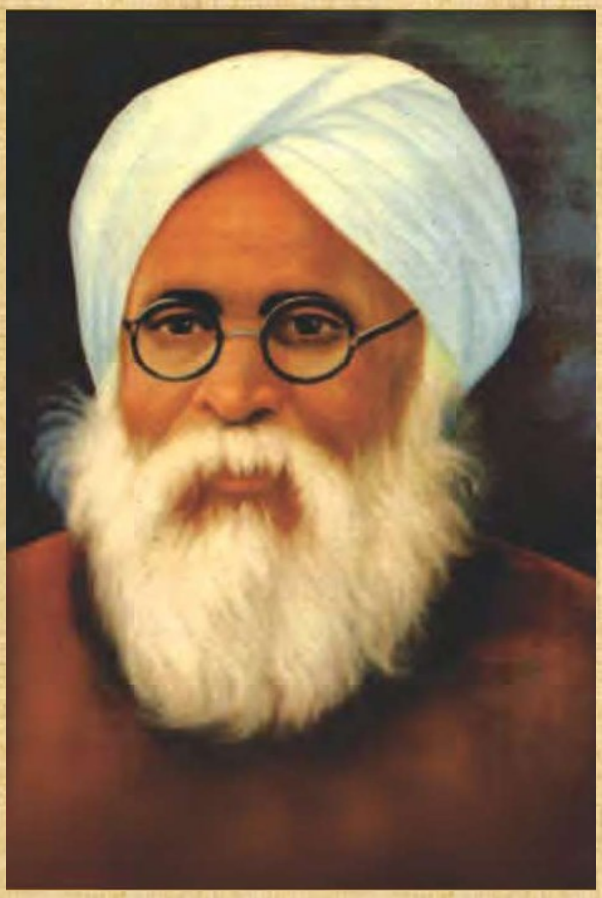

MAHATMA HANSRAJ

(1864-1938)

The College was founded to preserve the memory of Mahatma Hansraj, acknowledged as the founding father of the D.A.V. movement in undivided India. Frail in body but heroic in sprit, Mahatmaji was selflessly dedicated to the course of education. He started his career as the Honorary Founder Headmaster of D.A.V. School, Lahore, in 1886 and over the next 50 years went on to shape the destiny of the D.A.V. movement in India.

प्रकाशन समिति

- डॉ. विजय कुमार मिश्र
- सुश्री रूचि शर्मा
- डॉ. मन्जु
- डॉ. महेन्द्र प्रजापति
- डॉ. मनीष

समन्वयक

- श्री सुशील कुमार गुप्ता
  (प्रशासनिक अधिकारी)
- श्री अमित चौहान
  (वरिष्ठ सहायक)

प्रो. (डॉ.) रमा

प्राचार्या, हंसराज कॉलेज

'हंस' हंसराज कॉलेज की बहुभाषी वार्षिक पत्रिका है। इसमें हिंदी, अंग्रेज़ी और संस्कृत भाषा की रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं। कविता, कहानी, लेख, समीक्षा, साक्षात्कार आदि के माध्यम से हंसराज कॉलेज परिवार के सदस्यों की रचनात्मकता को सामने लाने की दृष्टि से यह बेहद महत्त्वपूर्ण है। अब तक की यात्रा में 'हंस' निरतंर प्रगति की ओर अग्रसर है। 'हंस' कॉलेज के युवा विद्यार्थियों के साथ ही रचनात्मक लेखन में रूचि रखने वाले प्राध्यापकों के लिए भी एक बड़ा मंच है। इसमें छात्र और प्राध्यापक दोनों की रचनात्मकता एक साथ उद्घाटित होती है। इसके माध्यम से नए लिखने वालों को एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म तो मिलता ही है साथ ही निरंतर लेखन की विशिष्ट प्रेरणा भी मिलती है।

कॉलेज के दिनों में 'हंस' में प्रकाशित होने वाले विद्यार्थियों में से कई लोग आज साहित्य, सिनेमा, मीडिया, कला आदि क्षेत्रों में अपना उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं। ये सभी आज अपने अपने क्षेत्र में जिस चोटी पर खड़े हैं उसके मूल में हंसराज कॉलेज और 'हंस' पत्रिका का विशेष योगदान है।

इस वर्ष अपने परम्परागत स्वरुप और नए भावबोध के साथ 'हंस' आपके सामने है। इस वर्ष का यह 'हंस' कोरोना संक्रमण के दौर में आए ठहराव के बीच भी रचनात्मकता को बनाए और बचाए रखने की दिशा में निरंतर सक्रियता के साथ काम करते रहने के हमारे संकल्प का प्रतिबिम्ब है। इस वर्ष भी अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाओं से युक्त 'हंस' बेहद खास है। इसमें प्रकाशित होने वाले विद्यार्थियों, शिक्षकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि आने वाले दिनों और वर्षों में ये सभी अपने लेखन से समाज और राष्ट्र को नई दिशा देने में समर्थ होंगे।

इस वर्ष के 'हंस' के संपादक मंडल को भी मैं हृदय से बधाई देती हूँ। अंत में मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों और सभी रचनाकारों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

डॉ. विजय कुमार मिश्र

हंसराज कॉलेज की लंबी और गौरवशाली यात्रा के क्रम में हमारी वार्षिक पत्रिका 'हंस' का विशिष्ट स्थान है। इसके माध्यम से देश-दुनिया के सम्बन्ध में हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के अनुभव, दृष्टिकोण और संवेदनाएँ विविध साहित्यिक विधाओं के माध्यम से प्रकाशित होती रही हैं। उनकी भावनाओं, विचारों, रचनात्मकता आदि के प्रकटीकरण का एक बेहद उम्दा प्लेटफॉर्म है 'हंस'। इसके माध्यम से समय-समय पर विद्यार्थियों के द्वारा बनाए गए चित्र आदि के माध्यम से भी उनके भाव को विस्तार मिला है। कक्षाओं की औपचारिक शिक्षा प्रणाली और नियमित पाठ्यक्रम के मध्य इस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

संपादक मंडल ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता को कविता, कहानी, लेख, समीक्षा, चित्र, फ़ोटोग्राफ आदि के माध्यम से 'हंस' के इस अंक में आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। इसमें प्रकशित हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत तीनों भाषाओं की रचनाएं हंसराज कॉलेज के विद्यार्थियों की भाषाई और रचनात्मक विविधता का द्योतक है।

रचनाएं आमंत्रित करने से लेकर, उनके चयन, प्रूफ और संपादन आदि की दृष्टि से संपादक मंडल के सदस्यों ने जो श्रमसाध्य कार्य किया है खासकर कोरोना संक्रमण के इस दौर में वह अभिनंदनीय है। 'हंस' का प्रकाशन हमारे संपादक मंडल के सदस्यों के साथ ही प्रशासनिक कर्मचारियों के सहयोग के बिना संभव नहीं था। ऐसे सभी लोगों का हृदय की गहराईयों से आभार। कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रमा ने हमेशा की तरह इस बार भी समुचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से इस अंक को अंतिम रूप देने में बड़ी भूमिका निभाई है। इसके लिए प्राचार्या मैम का विशेष धन्यवाद।

आशा है 'हंस' का यह अंक आप लोगों को पसंद आएगा और आपकी रचनात्मक संतुष्टि की दृष्टि से भी यह बेहद उपयोगी सिद्ध होगा।

सम्पादक मंडल

-डॉ. राजमोहिनी सागर

-डॉ. नृत्य गोपाल

छात्र-सम्पादक

-गोविंद उपाध्याय

-रविना धाकड़

विषयानुक्रमणिका

1. **आजमाइश सौगात** - डॉ. फरहत जहां
2. **सौगात** - डॉ. फरहत जहां
3. **कोरोना काल** - डॉ. अमित सहगल
4. **आदत** - डॉ. मुकुंद माधव मिश्र
5. **काजल** - डॉ. मुकुंद माधव मिश्र
6. **सावन तो फिर आएगा** - सचिन दुबे
7. **पढ़ाई मत छोड़ना** - ज्योति पाल
8. **अंकों की दौड़** - आयुष उप्रेती
9. **देश सेवाःपरमोधर्म** - पंकज सिंह
10. **मैंने सूर्य निकलते देखा है** - आर्यन
11. **निराकार** - ज्योति पाल
12. **बदलाव** - अक्षित कुमार
13. **बचपन के दिन** - अतुल कुमार श्रीवास्तव
14. **प्रकृति – सा जीवन** - स्वाति तिवारी
15. **उत्तर प्रदेश** - आकाश कुमार सिंह
16. **नारी** - गुलजहां
17. **सपना** - साक्षी सिंह
18. **दिवाली** - मंटू कुमार साह
19. **गरीब का हक कहाँ है** - विजय कुमार मीना
20. **नयन गीत** - प्रताप रजत
21. **गंगा की पुकार** - नितेश कुमार पांडे
22. **डोर जुड़ी है मेरे मन की** - शिवानी राजपूत
23. **अम्मा की टीस** - अलका तनीशा
24. **भावनाओं से बुना** - प्रीत चौधरी
25. **लफ्ज़** - अमीषा त्रिपाठी
26. **प्रकृति हर कलाकार की प्रेरणा है** - रिया उपाध्याय
27. **नहीं है तो मनुष्य** - मयंक
28. **वटवृक्ष** - प्रीत चौधरी
29. **जीवन में इतना संघर्ष क्यों है** - अंतरिक्ष श्रीवास्तव
30. **अंधेरे में उजाला** - नितेश कुमार पांडे
31. **मेरी दुनिया** - श्रोहन (कृष्णा मिश्रा)
32. **देश भक्ति कविता** - रामवीरेश यादव
33. **चमत्कार** - अलका तनीशा
34. **मैं हिंदी हूँ** - राम वीरेश यादव
35. **कोई और** - अंतरिक्ष श्रीवास्ताव
36. **रास्ता** - यशराज गुप्ता
37. **मैं काल हूँ** - शिवम सिंह
38. **कलाकृति** - तरुणेश्वर निखिल, मुस्कान रफ़िक

आज़माइश

डॉ. फ़रहत जहां
प्राणी विज्ञान विभाग

दिल के दर्द-ओ ग़म ज़रा मुझको बता कर देखना ।
पल दो पल को तुम मुझे बस आज़मा कर देखना
ज़िंदगी फिर से नज़र आएगी दिलकश और हँसी ।
अपनी आँखों में ज़रा अक्स लाकर देखना ।
बात सच है कि यक़ी एकदम से तो मुमकिन नहीं ।
हर तरीके से मुझे तुम आजमा कर देखना ।।
हर कदम पर पाओगे उम्र भर मुझे साथ में ।
मुझको तुम अपना ज़रा हमदम बना कर देखना।।
जिंदगी को इक ग़ज़ल तुमको बनाना है अगर ।
अपने होठों पर ज़रा मुझको सजा कर देखना।।
दिल है तेरा और तेरा ही रहेगा अब सदा ।
मेरी जानिब तुम ज़रा नजरें उठाकर देखना ।।
गर परखना चाहते हो तुम मुझे हमदम मेरे ।
तो ज़रा मेरे लिए खुद को मिटा कर देखना ।।

सौगात

डॉ. फ़रहत जहां
प्राणी विज्ञान विभाग

ज़िंदगी के इस सफर में तेरा साथ चाहिए।
है प्यासी ये ज़मीं इसे बरसात चाहिए ।।
रोते को हँसा दे वो तेरे लब अगर हिले ।
मुझको तो तेरे मन के वो जज़्बात चाहिए ।।
इन आँखों से निकले ना कभी एक भी आँसू ।
मुझको तो तेरे दिल का ऐसा अहसास चाहिए ।।
महसूस कर सकूं मैं तेरा दर्द हर घड़ी ।
मुझको खुदा से बस यही सौगात चाहिए ।।
'ऐ दोस्त' कुछ तो कह सकूं मैं तेरे वास्ते ।
'फ़रहत' ज़िंदगी से वो अल्फ़ाज़ चाहिए।।

कोरोना काल

डॉ. अमित सहगल
ऋणाणु विज्ञान विभाग

कैसा आया यह कोरोना काल, परेशानी में हमने नोच लिए बाल।
बीवी से हुई आज लड़ाई, कढ़ाई संग हमने सब्ज़ी जलाई।
घर पर बैठो यह है सरकार का कहना,
मुश्किल हो गया बीवी संग रहना।
चिंटू ने ऑनलाइन क्लास लगाई,
मैडम ने पढ़ाई छोड़ बच्चों को फटकार लगाई।

सोचा था अब ऑफिस से छुट्टी मिलेगी,
क्या पता था कंप्यूटर के आगे ज़िन्दगी पिलेगी।

चारों तरफ लगी खरीदने की होड़,
लोग रहे सोशल डिस्टेंसिंग को तोड़।
अब ना है कोई देरी का बहाना,
ऑफिस का मतलब है कम्प्यूटर के सामने जाना।

याद आती है वो ब्रेक में चाय की प्याली,
अब तो बस किचन में मांजते हैं थाली।

रहता है फ़ोन की घंटी का इंतजार,
बार-बार घड़ी देखता हूँ यार।
पशु-पक्षी बेपरवाह हैं सारे,
इंसान पिंजरे से उन्हें निहारे।
कब जाएंगे हम ससुराल या मायके,
कब बदलेंगें मुँह के ज़ायके।
यमराज कर रहा आजकल ओवरटाइम,
मृत्यु हो रही बिना कोई क्राइम।
बन्द हुए भगवान के घर सारे,
कोरोना ने सारे काम बिगाड़े।
कैसा आया यह कोरोना काल,
प्रगति की रुक गयी चाल
कैसा आया यह कोरोना काल,
कैसा आया यह कोरोना काल।

आदत

डॉ. मुकुन्द माधव मिश्र
गणित विभाग

दृश्य 1

(छोटी सी गोल मेज पर कुछ बिखरे पन्नों और कुछ पेन और पेंसिल के साथ एक डिजिटल टेबल घड़ी रखी है। घड़ी के साथ में काली फ्रेम में मोटे-मोटे लेंस वाला चश्मा पड़ा है। घड़ी में 5:59:50 का समय और MONDAY दिखा रहा है। 10 सेकंड बीतते हैं और घड़ी में अलार्म बजता है। बिस्तर में से लगभग 65 वर्षीय बूढ़ा अलसाते हुए उठता है, और उठने के साथ ही अपना चश्मा पहनता है।)

बूढ़ा : क्या मुसीबत है, हर रोज़ 6 बजे मशीन की तरह उठ जाओ। कोई सुकून नहीं है।

बिस्तर में सोई हुई अपनी बीमार पत्नी की ओर देखते हुए

-- आज तो चाय नाश्ता भी खुद ही बनाना होगा। कितनी बार कहा है सेहत का ध्यान रखा करो, लेकिन कौन समझाए इन्हें।

दृश्य 2

(गैस स्टोव पर पतीले में चाय चढ़ी है और टोस्टर में दो ब्रेड लगे हुए हैं। बूढ़े प्रोफेसर साहब ब्रश कर रहे हैं। हर बार कुल्ली करने के बाद थोड़ा रुकते हैं और बड़बड़ाते हैं)

-- 35 साल हो गए, वही सुबह हड़बड़ी में तैयार होकर कॉलेज पहुँचो, रूम न 29 में क्लास लगाओ। वही शेक्सपियर पढ़ाओ। इतनी रूटीन जिंदगी तो भेड़ों की भी नहीं होती।
किचन में आकर जल चुकी ब्रेड और चाय निकाल कर डाइनिंग टेबल पर नाश्ता करने लगते हैं। नाश्ते के साथ भी झुंझलाहट जारी है।

-- इतनी उम्र हो गई, बीवी बीमार हो सकती है, हम नहीं। हमें तो वही क्लास पढ़ाना, चाक की धूल निगलना।
(ब्रेड की एक बाइट मुंह में लेते हुए)

-- आसान होता है 50 बच्चों की क्लास में खड़े होकर दो घंटे चिल्लाना और फिर इतना ही तो नहीं है, क्लास टेस्ट, असाइनमेंट, ये कमिटी, वो कमिटी। इससे उबाऊ कुछ हो सकता है?

दृश्य 3

(प्रोफेसर औसत से कुछ तेज़ चलते हुए कॉरिडोर में अपने क्लासरूम की तरफ पहुँचता है। हाथ में किताब, रजिस्टर, चाक और डस्टर है। रूम के बाहर जाकर ठिठक कर रुक जाता है क्योंकि अंदर कोई और क्लास चल रही है जिसमें कोई युवा टीचर पढ़ा रहा है।)
बूढ़ा प्रोफेसर अपने आप से बात करता है।

--मुझे बिना बताए रूम बदल दिया क्या? ये टाइम-टेबल बनाने वाले भी कुछ भी करते हैं।
(हल्के से कमरे में झांकता है।)

-- स्टूडेंट्स तो मेरी ही क्लास के हैं।
एक बार अपनी घड़ी की तरफ फिर से देखता है और फिर खिड़की से क्लास के बोर्ड को देखता है।

-- अरे! ये क्या! ये तो मेरा ही पेपर पढ़ा रहा है।
तभी प्रोफेसर का फोन वाइब्रेट करता है। प्रोफेसर क्लासरूम से थोड़ा आगे हटकर फोन उठाते हैं। फोन उनकी बीवी का है।

प्रो.-- हाँ, बोलो!

बीवी -- अरे आज सुबह सुबह कहाँ निकल गए? शुक्रवार को अपनी फेयरवेल पार्टी से आये थे तो कहा था मंडे को बिटिया दामाद के घर चलेंगे, रिटायरमेंट के बाद कुछ समय नातियों के साथ बिताएंगे। अब सुबह उठ के देखा तो आप ग़ायब।

प्रोफेसर क्लासरूम की तरफ पलटता है, और अवाक सा देखता रह जाता है।

काजल

डॉ. मुकुन्द माधव मिश्र
गणित विभाग

लक्ष्मण रेखा तुम गंगा सी,
मैं जल में जल कर पिघल गया।
ना राख बची ना अस्थि पिंड,
कर्पूर सरीखा सब जल गया।
जो शेष बचा वह श्याम धूम्र,
काजल बन कर थम जाऊँगा।
माना काला कलंक सा हूँ,
नैनों में पर सज पाऊँगा।
विरहा ही मेरी नियति किंतु,
आंसू संग बह मिट जाऊँगा।।

सावन तो फिर आयेगा

सचिन दुबे
बी.एससी. गणित (विशेष) प्रथम वर्ष

सावन तो फिर आयेगा,
तुम न आओगी बारिश में,
न तुम बैठोगी झूले पर,
न मैं बैठूंगा झूले पर,
न होगा हाथ तुम्हारे काँधे पर,
फिर झूला भी तन्हाई में ऐसे ही जंग खायेगा,
सावन तो फिर आयेगा !
सावन तो फिर आयेगा,

तुम न आओगी नदीघाट पर,
न बूँदों में संग भीगोगी,
न पैर नदी में डालकर पंजों को टकराओगी,
न बौछार से बचने के खातिर छाते में संग आओगी,
फिर छाता भी तन्हाई में ऐसे ही टूट जायेगा,
सावन तो फिर आयेगा !!

पढ़ाई मत छोड़ना

ज्योति पाल
हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

बातें होंगी , मुलाकाते होंगी,
लोग आयेंगे, लोग जायेंगे,
पर तुम सुनो,
पढ़ाई मत छोड़ना!
इश्क होगा इबादतें होंगी,
नफरते होगी आदतें होंगी,
पर तुम सुनो,
पढ़ाई मत छोड़ना,
जीवन होगा, मरण होगा,
खुशी और गम के आंसू बहेंगे,
पर तुम सुनो,
पढ़ाई मत छोडना ।

अंकों की दौड़

आयुष उप्रेती
बी. ए. प्रोग्राम प्रथम वर्ष

प्रतिभा अंकों के रूप में परिलक्षित होती है,उसका प्रतिमान है। किसी की अदम्य क्षमता और प्रतिभा की और कब नजर जाती है ?जब सहसा कोई खुद को अंकों के जरिए प्रकट करता है तब उसे संवारने और सहेजने की प्रक्रिया शुरू होती है। अंधानुसरण की भेड़-चाल में कैसे सही प्रतिभा को चिन्हित किया जाए, इसका एकमात्र मानक उसके द्वारा अर्जित अंक होते हैं। आज हर क्षेत्र में भयंकर प्रतिस्पर्धा है।

हर जगह नरमुण्ड दिखाई पड़ते हैं। किसे अवसर मिलना चाहिए, यह यक्ष प्रश्न है। इस अपार भीड़ में कुछ तो सार होगा। इस खारे समुद्र में कुछ तो रत्न होंगे ही। इसके लिए आंकिक मूल्यांकन रुपी मंथन करना पड़ता है। तब जाकर जगमगाते सितारे प्रकट होते हैं। उनके मस्तक उनके द्वारा प्राप्त अंकों से आलोकित होते हैं। सबसे अलग दिखने का कारण परिश्रम रूपी कांति होती है। उनकी लगन और एकाग्रता से पाए हुए अंक उनके कंठहार होते हैं। प्रतिभा को परखने के यह मानदंड हमें हमेशा प्रेरित करते रहते हैं।

आंकिक मूल्यांकन एक वैज्ञानिक प्रणाली है। इसे समय ने अनेक बार परखा है और यह सत्यापित हुई है, तभी तो शताब्दियों से यह प्रतिभाओं की खोज का आधार है। विश्व भर के इतिहास एवं साहित्य में उल्लेखित घटनाओं एवं कथाओं ने इस मूल्यांकन को सत्यापित किया है।

'डिजाइनर टैलेंट' या रोपित प्रतिभा की प्रतिकृति, नकल आदि का समग्र मूल्यांकन से कोई नाता नहीं है। कोई व्यक्ति अगर स्वयं को दिए गए काम जैसे पढ़ना और ज्ञानार्जन करना, करने में फिसड्डी हो तो वह प्रतिभावान कैसे हो सकता है ।

आज की परीक्षा पद्धति पुस्तकीय ज्ञान की सीमा से परे समग्रता में मूल्यांकन करती है। प्राप्तांको के आधार पर चयनित प्रतिभाओं को जब संवारा गया तो उन्होंने भारत के स्तर पर ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व भर में अपना डंका बजा दिया। भारत की मेधावी प्रतिभाओं की ओर सारा विश्व सम्मान की दृष्टि से देखता है।

अंकों की दौड़ शब्द नकारात्मक है परंतु यह दौड़ प्रतिभाओं के पिछड़ने की कारक कतई नहीं है। भारतीय ज्ञान के मंदिर जैसे आईआईटी, आईआईएम, डीआरडीओ, इसरो, आदि में सर्वाधिक मूल्यांकन से चयनित प्रतिभाओं की पूजा होती है, कुंठित भाग्यवादियों की नहीं। यही दौड़ हमें कर्तव्यपरायण बनाती है और नैया पार लगा सकती है।

देश-सेवाः परमोधर्मं

पंकज सिंह
एम. एससी.

आँखों में इक सपना था
कहने को ये देश अपना था
यहीं जन्म लिया
यहीं मरना था
पर उससे पहले
देश के लिए कुछ करना था
इस मातृभूमि का ऋण
हमको चुकता करना था
इसकी गौरव और अस्मिता
अपना सर्वस्व देकर भी बचाना था
जो ख्वाब था आँखों में
उसको जीवंत बनाना था
कंधे पर सितारे
छाती पर मेडल
हमको अपने सजाने थे
दूसरों से खुद को
हमको अलग बनाना था
देश सेवा के लिए
हमको सर्वस्व न्यौछावर कर जाना था
लोगों को भाती नौकरी
ठाठ ऐशो आराम की
लोगों से इतर
मेरा सपना हिन्दुस्तान था
जिस मिट्टी ने जन्म दिया
जिस मिट्टी ने धर्म दिया
अब उसको गले लगाना था
भारत माता के चरणों में
अपना शीश झुकाना था
ना ख्वाब था ना कोई सपना
बस इक अरदास थी
अपने आने वाले कल से
जो कर सकूँ मैं चुकता
ऐसा मुझे वरदान दे
भारत माँ की गोद में
मुझको तू सौंप दे
भारत के वीर प्रहरी बन
हमको जीवन जीना है
धन्य हुआ मैं इस जीवन में
जो जन्म यहाँ पाया है
देशों की गिनती नहीं
इस धरा इस जहान में
पर माँ कहलाती केवल हिन्दुस्तान है
इस माँ की गौरव की खातिर
पागल सारा हिन्दुस्तान है
जो जन्म लिया है इस धरा पर
तो इसका धर्म निभाऊँगा
मरने से पहले इसको स्वर्ग बनाऊँगा
कहने को है अनमोल धरा
मुझे इसका कर्ज लौटाना है
जो देखा स्वप्न खुली आँखों से
उसको यर्थाथ बनाएँगे
देश की सेवा में हम
अपना सर्वस्व लुताएँगे ।

मैंने सूर्य निकलते देखा है

आर्यन

मैंने सूर्य निकलते देखा है
उसे साथ में चलते देखा है
मेरे सामने ढलते देखा है
मैंने वक़्त बदलते देखा है

साईकल पर मीलों चलते थे
ऋतुओं को बदलते देखा है
भोर से सांझ बाहर रहते
भूख मचलते देखा है
कभी सुबह तो कभी शाम
दीपक भी जलते देखा है
कांधों पर टाँगे बस्ता
लोगों को बदलते देखा है
उस सूरज को भी मैंने
अपना रंग बदलते देखा है
मैंने वक़्त बदलते देखा है...

निराकार

ज्योति पाल
बी.ए. हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

वह आज आज में मस्त हुआ
आगे का ना सोचा उसने
फिर आगे जाकर जीवन भर उसको
पछतावा और कष्ट हुआ
वह बहते नीर को देख - देख
प्रफुल्लित खुद को करता था
फिर एक दिन उसने नीर को
रोका ..... और खुद को
उसमें ही मदमस्त किया , फिर
बाधाओं के सागर ने उस बांध
को एक दिन तोड़ दिया
एक बाढ़ आयी मर्यादा की
जो सबकुछ बहा ले चली गई
जब जाना हाल अपना
तो आशाओं से गश्त हुआ
वो जो था बांधने चला नीर को
रिश्तों से वह हार गया
समाज शास्त्र का ज्ञानी था
पर राजनीति से हार गया
जो बाढ़ आई थी पानी की
उसमे तो बचना मुमकिन था
पर आशाओं की बाढ़ ने
उस बेचारे को मार दिया
हत्या हुई थी सरे आम
पर कोई नहीं कह पाता था
जिसने ये अत्याचार सहे
वह हर चोट सहन कर जाता था
जो बोला उसका हश्र देख
सब खुद ही चुप हो जाते हैं
वे सब उन्हीं का खाते हैं
वे सब उन्हीं की गाते हैं
खाने गाने से दूर करो तो
सब में थी एक आग दफन
फिर एक दिन एक चिंगारी ने
उस आग को फिर से जला दिया
वह जलती आग को देख देख
खुद उससे ठंड मिटाता था पर
अपने भीतर की तपिश को
वह सहन नहीं कर पाता था
फिर एक दिन उस तपिश ने उस
हारे पर प्रहार किया
वह गैरों से तो सुरक्षित था
पर अपनों ने था वार किया
जब इन सब का प्रतिकार हुआ
जब मानवता पर वार हुआ
उसको पाया जब मृत सबने तब
उस जगह पर हाहाकार हुआ
वह चला गया तो क्या हुआ
स्मृतियों में वो आता था
उसको सब वहीं पर पाते थे
जहां पर वह निर् - आकार हुआ।

बदलाव

अक्षित कुमार
बी.एससी. (विशेष) गणित, प्रथम वर्ष

ऐ बेखबर
बेखबर वालों का
"बदलाव जरूरी है।"
परिणाम देखिए
गाँव बन चुके शहर,
शहर बन चुके जंगल।
चलने वाले इंसान,
आज बन चुके जानवर।
कल तक के थे मददगार,
आज हर काम मे हराने के दाब ढूँढ़ते हैं।
बड़े अजीब हैं ये लोग,
कुल्हाड़ी लेके छाँव ढूँढ़ते हैं
जो अपनों को देख हँसते थे ,
वो अपनों को देख आँख मूँद लेते हैं
जिनकी गरीबी अमीरों से गजब थी
वो भी आज दिखती राहें ढूँढ़ लेते हैं।

बचपन के दिन

अतुल कुमार श्रीवास्तव
बी.ए. हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

बचपन के दिन थे कितने सुहाने,
चलो फिर चलें उन दिनों को वापस लाने,
जहाँ थी मस्ती , थी जहाँ नादानी,
थोड़ा सा गुस्सा , थोड़ी सी मनमानी ।
वो तीन पहियों वाली साईकिल भी कितनी प्यारी थी,
अपने खिलौने की हिफाज़त की
कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी
वो दिन भी थे कितने अच्छे ,
वो गलियाँ वो मोहल्ले के बच्चे ।
होली के उन रंगों में भी तो कुछ बात थी,
मकर संक्रांति की उन पतंगों में ज़ज़्बात थी
दिवाली की फुलझड़ियों को हम कैसे भूले,
वो नीम के पेड़ पर खुद के लगाए हुए झूले।
रिश्तेदारों के जाने का होता था इंतजार,
उनसे कमाए हुए पैसों से था जो प्यार,
उन्हीं पैसों को लेकर दुकान दौड़ जाना ,
रबड़ी , चूरन और चॉक्लेट फिर मिलकर खाना ।
टूटे हुए दाँत रखकर सोने में भी मजा था
जिंदगी जीने का एक अनोखा वजह था ,
जानवरों की आवाज भी तो निकालना था,
नए खिलौनों से अपने दोस्तों जलाना था।
मेले का वो दृश्य भी था कितना लुभाना ,
नए खिलौनों को खरीदने था हमें जाना,
याद है मुझे पापा की पीठ की सवारी,
दोस्तों के साथ वो कट्टी -पक्की वाली यारी ।
लुका-छिप्पी और बर्फ-पानी का वो खेल,
पटरी पर चलने वाली मेरी खुद की रेल ,
गर्मी की छुट्टी भी स्वर्ग
की प्राप्ति से कम नहीं थी,
माँ भी मुझे डांटते-डांटते थकती नहीं थीं।
बारिश के दिनों में कीचड़ में कूद जाना,
ठंडी के दिनों में पहाड़ लगता था नहाना,
स्कूल ना जाने के लिए तैयार थे सौ बहाने,
बचपन के दिन थे कितने सुहाने ।
बीमार पड़ने पर माँ वो कड़वी दवा पिलाती,
जिसे पिलाने के बाद उसकी जान में जान आ जाती,
याद हैं वो जिद , वो हठ, वो नादानी और मनमानी,
किसी पाठ्यक्रम से कितनी प्यारी थीं
दादी नानी की कहानी,
छल , कपट का पाठ तो हमने कभी सिखा ही नहीं
झूठ और फ़रेब को हमने जाना ही नहीं,
गणित के पहाड़े, और हिंदी की कविता
दिन देखो कितना जल्दी-जल्दी था बीतता ।

प्रकृति-सा जीवन

स्वाति तिवारी
एम. ए. हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

जीवन में खुशियां सदाबहार के पौधों सी हो,
जो हर जगह प्राप्त हो।
दुख खरपतवार सा हो,
जिन्हे उखाड़ फेंक दिया जाए।
जीवन में सफलता सूर्य की किरणों सी हो,
जो हर जगह प्राप्त हो।
हमारी सोच समुद्र सी विशाल और विस्तृत हो,
जिससे सही न्याय हो।
हमारा मन सदानीर सा निश्चल और धरती की माटी सा पावन हो,
जिससे हमारा जीवन समृद्ध हो।

उत्तर प्रदेश

आकाश कुमार सिंह
एम.ए. (हिन्दी) द्वितीय वर्ष

भारत गले में विश्व के
फूलों का हार है
उत्तर प्रदेश देव पुष्प
हर श्रंगार है
हर धरती में ये राम की है
परशुराम की धरती
बिखरे हैं स्नेह रंग जहाँ
श्याम की धरती
मीरा की साधना है ये
राधा का प्यार है
ये तप है बाल्मीकि का
श्री व्यास की वाणी
तुलसी,कबीर,सूर की
रैदास की वाणी
गीता का तत्व ज्ञान ही
इसका श्रृंगार है
कविता है 'भारतेन्दु' की
'प्रसाद' की व्यथा
'मजरूह' की ग़ज़ल है
'प्रेमचन्द' की कथा
'नीरज' का गीत
देवकी' का चमत्कार
ये वीरता हमीद की
विस्मिल की जवानी
आज़ाद की अशफाक की
है शौर्य कहानी
अब तक सुना रही जिसे
गंगा की धार है
काशी का सबेरा है यहाँ
लखनऊ की शाम
चाहत का ताज,योग का गोरक्षनाथ धाम
कुशीनगर का 'सूर्य मन्दिर' व यहाँ है
रामकोला धाम
भृगुक्षेत्र, तीर्थराज की
महिमा अपार है
इसकी नज़र लगी है
सितारों से भी आगे
चाहत है ये मजबूत रहें
हार के धागे
स्वागत में इसके आगे
सफ़लता का द्वार है
ये है उत्तर प्रदेश।

नारी

गुलजहां
एम.ए हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

पुरूष प्रधानता की
ज्वाला जलती नारी
घर पे पूजापाठ करते
बाहर बन बलात्कारी
अत्याचार करते उस पर जो , जानती
दुनिया सारी
जिसके जीव-जंतू,
पशु-पक्षी
सारे है आभारी ।

सपना

साक्षी सिंह
बी.ए. हिन्दी (विशेष) तृतीय वर्ष

मत छोड़ तू वो सपना,
जो तूने देखा है,
इनका तो काम है कहना,
अरे इनका तो काम है कहना.,
तू वो कर जो तूने ठाना है..
मत छोड़ तू वो सपना,
जो तूने देखा है,

फौजी अरे फौजी बनना
इतना आसान नहीं
इस खाकी की कीमत
इन्हें मालूम नहीं
अरे! सरहद पर जाना
सबके बस की बात नहीं...
उस -50० में खड़े रहकर
वतन की रखवाली करना
सबके बस की बात नहीं
मत छोड़ तू वो सपना,
जो तूने देखा है,
आज जो हंसते है
हंसने दे उन्हें
सुन, आज बस
तेरी किस्मत रुठी है,
अब बस मेहनत से
इसे मनाना है
मत छोड़ तू वो सपना,
जो तूने देखा है,
अब बस !
अपनी मेहनत से इस
वर्दी को अपनाना है,
अब बस _अब बस
साक्षी से ऑफीसर साक्षी
कहलाना है ।

दिवाली

मंटू कुमार साह
बी. ए. हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

उजाले से होती है, अंधेरे की हार
भेद भाव त्यागकर करें, सब लोगों से प्यार।
दीप बनकर सभी उजियारा करें,
दीवाली है ,ये प्रण लेने का पावन त्योहार।
(1)
प्रभु राम से मिलता है,सच्चा जिंदगी का सार।
शत्रु पर भी किये ना, वो पहले स्वयं से वार।
दोष मान लेने पर ,वो नहीं मानते हैं हार
दीवाली है, ये प्रण लेने का पावन त्योहार।
(2)
नफरतों से ना होती, कभी नफरतों की हार,
ना कोई मिलती खुशी,ना होता चैन का विस्तार ।
प्यार को प्यार रहने दो, ना बनने दो व्यापार।,
दिवाली है, ये प्रण लेने का पावनत्योहार।
(3)
ये जिंदगी है साहब समस्याओं का भंडार,
कभी मिलती है जीत कभी मिलती है हार।
फिर से उठकर जरूर, तुम चलो बार - बार ,
दिवाली है ,ये प्रण लेने का पावन त्योहार।
(4)
बढ़कर शिक्षा से, कोई जीवन में ना उपहार ,
तलवार से भी तेज है होती, कलम की धार,
बेटी बचाएंगे , पढ़ाएंगे , ये कर लो स्वीकार ,
दीवाली है, ये प्रण लेने का पावन त्योहार।
(5)
एक प्यार भरे दीप से, शहीदों को है नमन,
इन सपूतों से ही है, देश में शांति चमन ।
सभी शीश झुकाएं, इनके चरणों में बार - बार,

दिवाली है, ये प्रण लेने का पावन त्योहार।

ग़रीब का हक कहाँ है

विजय कुमार मीना
बी.ए.संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

चाहता तो था पढ़ना - लिखना वो, उसकी गरीबी ने उसे मार दिया।
मिला जो हक संविधान से उसे, तो संविधान विरोधियों ने कर - कर विरोध मन को उसके तोड़ दिया।
उस गरीब को तो उसकी गरीबी ने मार दिया।
लगा जो कुछ अलग करने तो धर्म जाति से लोगों ने उसे जोड़ दिया।
यह पाप है यह पुण्य हैं उस धर्म ने उसे उससे जोड़ दिया।
ग़रीब था वो उसकी गरीबी ने उसे मार दिया।
लगा जब वो कमाने घर चलाने को, तो अमीरों के घर सफ़ाई करने, खेतों में उनके हल चलाने, उन अमीरों को ही अमीर बनाने।
चाहता था वो ये सब नहीं करना, मजबूर था उसकी जाति धर्म ने करवा दिया।

ग़रीब था वो उसकी गरीबी ने उसे मार दिया।
जब हुईं शादी बच्चे तो, चाहता था ना भोगें बच्चे मेरे भोगा जो मैंने,
ना बीते बीती जो मेरे पे,
ना करे किया जो मैंने।
पर क्या करता वो गरीब था उसकी गरीबी ने उसे मार दिया।
चाहता था वो उन्हें पढ़ाना - लिखाना ।
लेकिन गरीब था वो उसकी गरीबी ने उसे मार दिया।
जब हुए बच्चे बड़े शादी के लिए, लगा ढूंढने वर, वधू शादी के लिए उनकी।

फिर लगा वो पैसे जुटाने दहेज़ के लिए,
तो अमीरों के घर वो पहुंच गया ,
अमीरों ने उन चंद पैसों के खातिर उसके परिवार को बंधवा बना लिया।
गरीब था क्या करता वो उसकी गरीबी ने उसे मार दिया।
शादी हुई गरीबी में तो घर में भी तनाव बढ़ गया।
आपसी मन मुटाव लगा था बढ़ने।
गरीब था वो आज सच में उसकी गरीबी ने उसे मार ही दिया।
चाहता था बहुत कुछ करना वो पर उसकी गरीबी ने उसे मार दिया।

नयन गीत

प्रताप रजत
बी. ए. इतिहास (विशेष) प्रथम वर्ष

कितने कौतुक कौतूहल से भरे नयन वे,
झांक रहे निष्पलक अपल इन आँखों में।
मिल पड़ने को आतुर कितनी आतुरता,
लेती हिलोर टलमल मेरी इन बाहों में।
उर अमर पक्षी बन मुक्त हुआ,
स्वप्नों का ले संसार अखिल।
निशा मिलन, अम्बर उपवन,
सुमन बने तारक झिलमिल।
संध्या के क्षण श्रृंगार काव्य का,
नया सृजन पट रचते हैं।
सब सोये स्वप्नों में खोए,
अब शेष हमीं दो बचते हैं।
शेष बचे हैं तारे भी,
हंसते हैं, मुस्काते हैं।
या भूल शशि की माया को,
तुम्हें देख मुस्काते हैं।
यह पवन बहे, बहता जाए,
इतिहास अगिन कहता जाए।
तेरी आँखों की माया में,
संसार कुटिल ढहता जाए।
उच्छवासों की ऊष्म पवन से हो सुरभित,
भरकर नवछवि की नई ज्योति इन आँखों में
जगकर रवि की नव जानी सी निर्मलता से,
मैं जाग पड़ूँ, तुम सांस भरो इन बाहों में।

गंगा की पुकार

नितेश कुमार पाण्डे
बी.ए.हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

मैं वहीं लेट गयी,
अपनी बाहों का विस्तार कर ,
नीला, मुझको जीवन का रंग देकर;
एक विशाल स्वर बोलता है,
खुशबू के रूप में, मीठा, सांसारिक सुगंध, मेरे चारों ओर के माहौल को हैरान कर देता है।
मैं एक माँ हूँ ,
जीवन की दात्री,
मैं एक पिता हूँ रक्षक,
जरूरत के समय में सहायक;
मैं एक बेटी हूँ
अपनी आवश्यकताओं के लिए,
जरूरत है कि एक कारण हैं
मेरे अस्तित्व के लिए;
मैं गंगा हूँ, स्वर्गीय निवासिनी।
यहीं आप सभी प्राणियों के साथ रहती हूँ,
लेकिन जैसे ही प्रणय उतरता है,
मैं वहीं पड़ी रही तेल और गंदगी में;
मेरी भावनाएँ जैसा कि आप लोग कहते हैं,
वे दयालुता के आपके क्रूर कृत्य से प्रभावित हुए हैं।
मेरा नाम जो वहाँ है,
शून्य के निकट यह वहाँ भूल है;
मेरा विस्तार, मेरा अवशोषण,
सबसे बुरा आप मुझे देना है।
मैं एक माँ हूँ मैं मजबूत हूँ, फिर भी चुप हूँ,
मेरा प्यार बिना शर्त है
मैं एक पिता हूँ,
कोई फर्क नहीं पड़ता
कि दुनिया क्या कहती है,
तुम मेरे लिए एक बच्चा बने रहोगे,
मैं एक बेटी हूँ, एक बच्ची ;
जो क्षमा करना जानती है।
मैं गंगा हूँ,
जीवन देने वाली, पापों को लेने वाली
क्षमा करनेवाली और मुझे भुला दिया गया।
मैं गंगा एक कैदी हूँ,
सुस्त समय के चंगुल में;
मुझे उम्मीद है कि समय बदल जाएगा,
मुझे पता है कि समय बदल जाएगा।

डोर जुड़ी है मेरे मन की

शिवानी राजपूत

डोर जुड़ी है मेरे मन की गाँव की भीनी मिट्टी से,
फिर से काश बुलावा आवे पोस्टमैन की चिट्ठी से
कुछ पाने को आये शहर में पता लगा सब हट गया,
सपनों के पीछे में भागा अपनों का संग छूट गया।
शहर की सड़कें काटन दौंडे पगडंडी याद सताये,
ए सी की ठण्ड न भावे चौपालों की हवा बुलाये
दौसा गाँव की सच्ची ना झंझट ना जिम्मेदारी,
खाओ -पियो और खेलो-कूदो न
मतलब क्या दुनियादारी
मिट्टी में सन घर पहुँचे फिर देखें अम्मा और चिल्याये,
खींचे कान दो थप्पर देवे और पापा का खौफ़ जताये,
बहुत याद आता है मुझको पीपल पर रेशम का झूला,
गुड्डा गुड़िया , झूठी रोटी और मिट्टी का छोटा चूल्हा
गुड्डे-गड़िया की शादी में जमके डांस किया करते थे,
कोल्ड ड्रिंक भी नहीं वहाँ, हम चीनी घोल पिया करते थे
बहुत कमी थी जीवन में पर मस्त जिन्दगी जीते थे
प्यार भरे सुईधागे से, हम रिश्ते बैठ के सींते थे
नहीं खिलौने पास थे अपने, धूल में खेला करते थे,
अम्मा न ले देख कहीं इस डर से कितना डरते थे
नहीं था दुश्मन कोई वहाँ बस यारों पे सब मरते थे,
कोई अगर मुश्किल में हो तो मदद सभी मिल करते थे
उखड़ गया वो गाँव मेरा पर शहर तेरा आवाद रहा,
मैं शहर में आके कैदी बन गया गाँव मेरा आजाद रहा
नमस्कार गये भूल सभी बस, hii-hello ही याद रहा,
मिलना- झुलना भूल गए सब whatsapp जिंदाबाद रहा
पैर न छूता कोई किसी के संस्कार सब भूल गये
Whatsapp - facebook की दुनियाँ में रिश्ते फाँसी झूल गए।

अम्मा की टीस

अलका तनीशा
बी.कॉम. प्रथम वर्ष

वर्षों पूर्व जब मैं छः-सात वर्ष की रही होंगी। मेरी माँ ने मुझे सुनील काका के विषय में बताया था। उन्होंने अपनी वृद्ध माँ-बाबूजी की सेवा नहीं की थी। मैंने माँ से पूछा था कि क्यों नहीं की तो उन्होंने कहा कि काका के आजी-बाबा की सेवा उनके माँ बाबूजी ने नहीं की थी। काका अपने आजी बाबा से असीम प्रेम करते थे। उन्होंने कहा कि "जब तुमने हमारे आजी बाबा की सेवा नहीं की तो हम तुम्हारी क्यों करें?" उन्होंने भी अपने माँ -बाबूजी की सेवा नहीं की। माँ ने कहा कि काका भी अपनी जगह सही हैं। जैसा करोगे आगे चलकर वैसा ही भरोगे। माँ ने काका का समर्थन किया।

एक बार की बात है, मैं आठ या नौ वर्ष की थी। मैं बड़े घर आई थी। चाची ,बड़ी माँ और अम्मा से मिलने; अब हम लोग अलग रहने लगे थे। दोपहर का समय था। चिलचिलाती धूप थी। चाची भोजन पकाते-पकाते माँ से गप्पें भी लड़ा रहीं थीं। घर के भीतर भी एक छज्जा था। मैं भी माँ के साथ छत पर थी। छज्जे से नीचे का दृश्य देख रही थी। तभी अम्मा अपने कमरे से बाहर आईं और ज़मीन पर पड़े हुए पानी पर फिसल कर अकस्मात् धम्म से गिर पड़ीं। आवाज आई, " हे !राम हे! राम" मुझे उन्हें गिरा हुआ देखकर बहुत तकलीफ़ हुई। मैं उन्हें उठाने ही जा रही थी कि माँ ने तुरंत पूछा "क्या हुआ?" मैं दर्द और भय के साथ बोली "अम्मा गिर गई"। मैं जाती नीचे कि माँ ने कहा "रुको! मत जाओ" मुझे धक्का सा लगा। नीचे एक वृद्ध महिला जो फिसल कर गिर गई है, दर्द से चीख रही है ,जो मेरी दादी है। जो मेरे पूज्य पिताजी की पूजनीय हैं। उन्हें उठाने ना जाऊं। मेरे हृदय की पीड़ा को माँ के वचन ने और बढ़ा दिया था। मैं धर्मसंकट में थी किसकी बात का मान रखूँ? एक ओर जन्म देने वाली पूजनीय माँ थी। दूसरी ओर अपनी थाली का दूध पिला कर खुद सूखी रोटी खाने वाली दादी माँ थी। एक ओर अम्मा की टीस थी, दूसरी ओर माँ का आदेश था। मैंने माँ की बात का मान रखा। मैं नहीं गई। ताऊजी व उनकी बेटी ने अम्मा को संभाला। परंतु मेरे मन में माँ के लिए क्रोध और आक्रोश की भावना जन्म ले चुकी थी। मैं उनके इस निर्णय से आहत थी।

हृदय में प्रश्नों का सैलाब उमड़ रहा था। मैं माँ से चीख-चीख कर पूछना चाहती थी कि आप मुझे कैसा उदाहरण, कैसी सीख दे रही हैं? मुझे सुनील काका वाली बात याद आई। मुझे उनका दुःख समझ आया। मैं उनका दुःख महसूस कर पा रही थी। क्योंकि अम्मा को जो तकलीफ थी वह शारीरिक थी। परंतु मुझे मन में पीड़ा हुई थी। करारा दर्द उठा था छाती में। मेरे मन में इतना आक्रोश और इतनी नफरत माँ के लिए कभी नहीं थी। मुझे सुनील काका का निर्णय सही लग रहा था। मुझे इस बात का दुःख हुआ कि माँ मेरा दुःख ना समझ पाईं।

मेरे पास उस समय दो विकल्प थे, या तो मैं माँ से आजीवन इस बात के लिए रूठ जाती या मैं उन्हें क्षमा कर देती। क्षमा करना उस समय बहुत दुःखदाई लग रहा था। मेरे समक्ष सुनील काका थे, अम्मा थी, और मेरी प्यारी माँ थी। मैं मन ही मन नाराज थी, फिर मैंने अपने हृदय को शांत किया। मैंने दृढ़ निश्चय किया कि मैं आजीवन किसी भी बच्चे की अम्मा को ऐसी तकलीफ़ नहीं दूंगी। मैं किसी भी बच्चे को कभी ऐसी पीड़ा नहीं दूंगी, जो मुझे हुई। चाहे मैं अपने घर में रहूं या किसी और के घर जाऊं। मैंने अपने आपको समझाया कि माँ ने भले ही जो भी किया हो मैं उनके साथ ऐसा कभी नहीं करूंगी। मुझे भी पीड़ा हुई पर मैं माँ को ऐसी पीड़ा कभी नहीं दूंगी,जब वह वृद्ध होंगी तब भी नहीं। जब मैं अपने ससुराल जाऊंगी, किसी भी वृद्ध के साथ ऐसा दुर्व्यवहार नहीं करूंगी। मैंने माँ को मन ही मन क्षमा कर दिया। आखिर माँ है वह मेरी ,मैं उनको दादी माँ से अधिक प्यार करती थी। आज भी करती हूं, तभी शायद उस दिन माँ का कहा नहीं टाल पाई थी। एक अच्छी बेटी और बहू बनने का निर्णय लिया था ताकि मैं किसी भी बच्चे को और उसकी दादी को या उसकी माँ को कभी भी ऐसी टीस ना दूं, जो अम्मा को उस दिन माँ ने दी थी। ऐसी चोट ना दूं, जो उसके जीवन पर दुष्प्रभाव डालें और गलत फैसले लेने पर मजबूर कर दे।

आखिर में ,मैं अपनी प्यारी अम्मा से मिलकर हँसी-खुशी इस दृढ़ संकल्प और अपनी मां के साथ अपने घर आ गई । मैं और माँ हंसते खिलखिलाते साथ रहते हैं। आज भी मेरे मन में उनके लिए नफरत नहीं, मात्र प्रेम की भावना है।

भावनाओं से बुना

प्रीत चौधरी
बी.ए.इतिहास (विशेष) प्रथम वर्ष

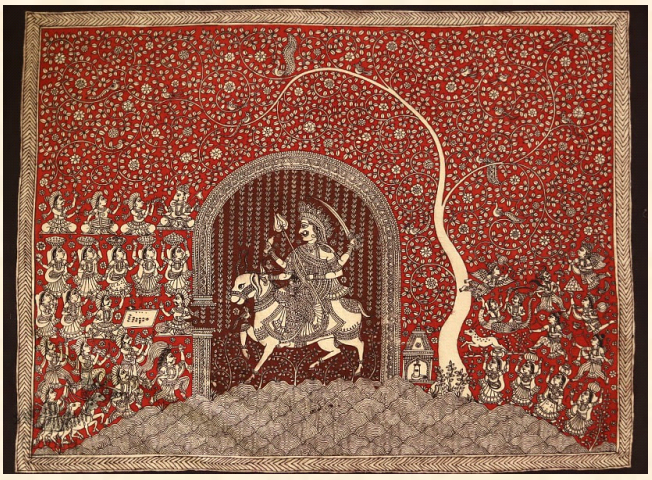

माता नि पछेडी , जिसे गुजरात की कलमकारी भी कहा जाता है, भारत की एक अनोखी परंपरा है। इसका शाब्दिक अर्थ है, 'देवी माँ के पीछे'। यह एक ऐसा कपड़ा होता है जिस पर देवी माँ का मंदिर चित्रित किया जाता है और उसकी पूजा की जाती है ।

इतिहास :

आज से लगभग तीन सौ साल पहले गुजरात के देवीपूजक वाघारी समुदाय को दूसरों से निम्न तबके के होने के कारण मंदिरों में प्रवेश से वंचित रखा गया। इस कुप्रथा के प्रतिरोध में, खानाबदोशों ने एक अनोखी परम्परा की शुरुआत की । उन्होंने देवी की एक छवि को कपड़े के एक टुकड़े पर चित्रित किया और इस चित्र की ओर पूजा का प्रावधान आरंभ किया। विभिन्न कथाओं, मिथकों और गाथाओं को इस परंपरा के माध्यम से सुनाया जाने लगा जैसे कि खोडियार, बहुरचरण , सोलंकी, अंबा और अन्य देवियों की कहानियाँ।

कलाशैली :

देवी पूजक समुदाय पिछले 300 - 400 वर्षों से इस कला को जीवित रखे है। तीन मीटर लंबी पछेड़ी पारंपरिक रूप से गहरे लाल और काले रंग की होती हैं चित्रण आमतौर पर हाथों से किया जाता था लेकिन बाद में ब्लॉक उपयोग किए जाने लगे l पछेड़ी की रूपरेखा आमतौर पर यह है की केंद्र में देवी का चित्रण है, और अन्य तत्व उन्हें घेरे हुए हैं। पछेडी की विषयवस्तु उपासक के महाकाव्य, मिथकों, कहानियों और मान्यताओं से प्रभावित होती है। देवी का वाहन उनके अवतार को दर्शाता है । खोडियार एक मगरमच्छ के ऊपर स्थित है, जबकि मेलादी एक बकरे की सवारी करती है, और विहट एक भैंसे पर है। चामुंडी एक शेर के साथ दर्शायी जाती है , वाहवती एक नाव पर आसीन है। उनका हस्तक्षेप समस्याओं को सुलझाने, दंपतियों को गर्भ धारण करने में मदद करने और सभी तरह की इच्छाओं को पूरा करने के लिए किया जाता है। वरदान मिलने के पश्चात् भक्त देवी का धन्यवाद करते हुए प्रसाद चढ़ाते हैं। इन परिधानों पर विभिन्न देवी-देवता दिखाई देते हैं, जो अपने साथ कथाओं, प्रतीक-चिह्नों और संघों का एक संपूर्ण ब्रह्मांड लेकर आते हैं जैसे कि राम, सीता, रावण और राधाकृष्ण ।

प्रासंगिकता और विरासतः

वाघारी समुदाय आधुनिक समय में जयपुर और अहमदाबाद के क्षेत्र मे स्थित हैं| इस कला के कुछ अंतिम कारीगर परिवार अहमदाबाद में हैं| यह तंबू मंदिर शासकों द्वारा बनाये गए भव्य मंदिरों से बिल्कुल विपरीत हैं। खानाबदोश समुदाय के लिए यह एक निर्मित मंदिर के लिए एक रुचिकर विकल्प थे| माता नी पछेडी उन लोगों द्वारा प्रस्तुत प्रतिरोध का एक मजबूत प्रतीक है, जो "सामाजिक व्यवस्था" के नियमों का पालन नहीं करते हैं। इस अनूठी और पावन कलाकृति को पहचान की जरूरत है| इसे जीवन्त रखने हेतु स्थायी बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए पर्याप्त वित्तीय सहायता देने की आवश्यकता है।

लफ्ज़

अमीषा त्रिपाठी
बी. ए. हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

यूं तो लफ्ज़ लफ्ज़ हैं,
मगर ताकत बड़ी इन लफ़्ज़ों में।
आजमा कीजिए लफ़्ज़ों को मिलेगा,.
सब कुछ इन लफ़्ज़ों में।।
प्यार इन्हीं लफ्ज़ों में आता, तो नफरत भी इन्हीं लफ्ज़ों में।
विश्वास इन्हीं लफ्ज़ों में आता, तो धोखा भी इन्हीं लफ्ज़ों में।
विनम्रता इन्हीं लफ्ज़ों में आती, तो गुरूर भी इन्हीं लफ्ज़ों में।
यूं तो लफ्ज़ लफ्ज़ हैं, मगर ताकत बड़ी इन लफ्ज़ों में।
टूटे- रिश्ते जोड़ देते हैं ये लफ्ज़, जुड़े रिश्ते तोड़ देते है ये लफ्ज़।
आत्मविश्वास देते हैं ये लफ्ज़, तो कायरता भी सिखा जाते ये लफ्ज़।
अमर होते हैं ये लफ्ज़, तो भटकते भी हैं ये लफ्ज़।
यूं तो लफ्ज़ लफ्ज़ हैं, मगर ताकत बड़ी इन लफ्ज़ों में।
आंखों का तारा बना जाते हैं ये लफ्ज़,
तो आंखों का शूल भी बना देते ये लफ्ज़।
आदर देते हैं ये लफ्ज़, तो गालियां भी देते हैं ये लफ्ज़।
कौन कहता कि सिर्फ सच कहते लफ्ज़? झूठ भी बोलते लफ्ज़।
यूं तो लफ्ज़ लफ्ज़ हैं, मगर ताकत बड़ी इन लफ्ज़ों में।
दूरियां मिटाते हैं लफ्ज़, तो दूरियां बढ़ाते भी हैं लफ्ज़।
रुलाते हैं लफ्ज़, तो हंसाते भी हैं लफ्ज़।
दिल की छिपाते हैं लफ्ज़, तो दिल की बताते भी हैं लफ्ज़।
नज़रें चुराते हैं लफ्ज़, तो नज़रें मिलाते भी हैं लफ्ज़।
दुआ दिलाते हैं लफ्ज़, तो बद्दुआ भी दिलाते हैं लफ्ज़।
यूं तो लफ्ज़ लफ्ज़ हैं, मगर ताकत बड़ी इन लफ्ज़ों में।
दिल को चीर जाते लफ्ज, तो दिल का जख्म बनते लफ्ज़।
ऐतबार करते यह लफ्ज़, तो इंतकाम लेते लफ्ज़।।
अब तो इन लफ्ज़ों की गुजारिश है आपसे,
कि लफ्ज़ों की ताकत को जानिए।
आदतन लफ्ज़ का प्रयोग ना कीजिए।
एक बार बोलिए, तो सौ बार सोचिए।
प्रयोग कीजिए उन लफ्ज़ों का, जो आप चाहते हों अपने लिए।
लफ्ज़ों के बाण से प्रहार ना कीजिए।
आदतन इन लफ्ज़ों का प्रयोग ना कीजिए।
यूं तो लफ्ज़ लफ्ज़ है,
मगर ताकत बड़ी इन लफ्ज़ों में।
आजमा लीजिए लफ्ज़ों को,
मिलेगा सब कुछ इन लफ्ज़ों में।

प्रकृति हर कलाकार की प्रेरणा है

रिया उपाध्याय
बी.एससी. लाइफ साइंस प्रथम वर्ष

धरती धैर्य धारण का देती संदेश,
दे अनिल अनवरत चलने का आदेश।
ऊंचे पर्वत देते गंभीरता का उपदेश,
यह प्राकृतिक दृश्य देख धरा-अंबर संग झूमे सारा देश।
कल - कल करता नदियों-झरनों का जल,
कलाकार का मन हो जाता विहवल।
रंग - बिरंगे फल - फूलों को सींचता माली,
अभिव्यक्त होती प्रकृति के सुषमा की लाली।
देख प्रकृति का अनुपम सौंदर्य मयूर नाचे आंगना,
सूरज - चंद्रमा की छटा से मस्त होती मृगांगना।
गर्मी - सर्दी कभी वर्षा या हिमपात हो हिमांगना,
प्रेरित होते कवि, कलाकार, चित्रकार समेत नृत्यांगना।

नहीं है तो मनुष्य

मयंक
बी. ए. हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

हिन्दू है, मुस्लिम है
सिख है ईसाई है
नहीं है तो मनुष्य
दलित है, सवर्ण है
पंडित है, अछूत है ।
नहीं है तो मनुष्य,
डाक्टर है, कलेक्टर है
पेशगार है , हवलदार है
पत्रकार है, सरकार है
डंडा है, तलवार है
नहीं है, तो मनुष्य
लेफ्ट है, राइट है
सिपाही है, किसान है
नहीं है तो मनुष्य।
क्यों नहीं है मनुष्य ?

वटवृक्ष

प्रीत चौधरी
बी.ए. इतिहास (विशेष) प्रथम वर्ष

मैं बरगद का पेड़ हूं।
मैंने जमाने बदलते देखे हैं,
मैंने पूजा के दीपक जलते,
और घरानों के चिराग बुझते देखे हैं।
मैंने देखे हैं वह दिन सुहाने ,
मैं देख रहा हूँ यह दिन तरक्की के
और अपने अनुभव से चाहो तो कह सकता हूँ कि कल क्या होगा?
मैंने अपनी दाढ़ी पर बच्चों को झूलते देखा है,
मैंने अपने चारों और सावित्री सुहागिनों को पूजा करते देखा है,
मैंने देखे हैं वह फैसले पंचायत के,
मैंने सुनी है वह चर्चा बूढों की।
मैंने ज़माने बदलते देखे हैं |
मैंने उड़ते देखे हैं गुलाल होली के
मैंने देखे हैं जलते दिए दिवाली के
मेरे नीचे कभी शिव तो कभी राधा कृष्ण बैठे हैं
ऐसे ही थोड़े मैं पूजा जाता हूँ |
मैंने देखे हैं उद्गम संस्कार के
मैंने देखे हैं उद्भव संस्कृति के
मैंने देखी हैं शुरुआत रीति की
मैंने देखे हैं ज़माने बदलते ||
मैंने देखे हैं बच्चे गुरुकुल में
मैंने देखी है नींव गुरु शिष्य परंपरा की
मैंने देखे हैं ऋषि मुनि तपोवन में |
मैंने विश्वामित्र की तपस्या देखी है
मैंने शकुंतला की विवशता देखी है,
मैंने देखा है वनवास पांडवों का
मैंने राम की सद्भावना देखी है।
मैंने देखा हैं ज्ञान बुद्ध का
मैंने शक्ति-शिव का संवाद देखा है
मैंने देखा है वह सब कुछ जो नहीं दिखता आँखों से भी।
मैं हूँ वटवृक्ष मेरी छत्रछाया में सब खेल कूद कर बडे हुए
और आज तुम मुझे ही काटने चल दिये ||

जीवन में इतना संघर्ष क्यों है

अंतरिक्ष श्रीवास्तव
बी.ए. हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

भविष्यवाणी के ज्ञात होते हुए भी मनुष्य होनी को टाल नहीं सकता| समय चक्र के घटनाक्रम में आपत्तियों को तीन चरणों में देखना चाहिए पहला चरण पूर्वाभास और आत्मचिंतन का होता है | पूर्वाभास में घड़ी की सुई और मन की गति उसे हमेशा अपने ऊपर आने वाले संकट की सूचना देती रहती है| आत्मचिंतन घटना की सजीवता का पता लगने के बाद उसके निवारण का मार्ग ढूंढता है| खुशियाँ जूतों की धूल की तरह स्थायी नहीं होती|जैसे जूतों में धूल का आना जाना लगा रहता है वैसे ही जीवन में खुशियों का आना जाना भी लगा रहता है| आज भारत ही नहीं पूरा विश्व जिस महामारी से लड़ रहा है| इसका आभास भी विश्व को अवश्य हुआ होगा और आत्मचिंतन स्वरुप कई देश इस पर विजय पाने की चाह रखते हैं, दूसरा चरण संघर्ष से भरा हुआ होता है| इसमें संघर्ष के साथ साथ आत्मविश्वास का होना अति आवश्यक है| ये दोनों हमेशा एक दूसरे के पीछे रहते हैं| प्रकाश और अंधकार की भाँति साहस मार्ग में आने वाली अनेक समस्याओं से लड़ने की क्षमता प्रदान करता रहता है| लेकिन कभी कभी संघर्ष का काल इतना बड़ा होता है कि इसे करने वाला थक कर बैठ जाता है| इस समय आत्मविश्वास उसे धीरज देता है और अंधकार से प्रकाश तक जाने का मार्ग दिखाता है| भारत के लिए भी यह संघर्ष का समय है लेकिन यह इतना बड़ा संकट है| कि कई देश विकास से 20-25 साल पीछे पहुँच गए हैं| इस महामारी से लड़ने के लिए आत्मविश्वास के रूप में डॉक्टरों का अमूल्य योगदान है| यदि हम संघर्ष और आत्मविश्वास से इस महामारी से लड़ते रहे तो इतिहास के पन्नों में प्रेरणा के स्रोत होंगे| अंतिम चरण का अभी तक कोई बोध नहीं है, क्योंकि विश्व की तरह मेरा जीवन भी अभी संघर्षमय है।

अंधेरे में उजाला

नितेश कुमार पाण्डे
बी.ए.हिंदी (विशेष), द्वितीय वर्ष

मैं शांति के साथ वहाँ खड़ा था,
जटिल और पेचीदा ताला खोलने के लिए,
मेरे सिर में घूमती हुई
शाखाओं को तोड़ने के लिए,
सभी दीवारों पर फैली हुई
प्रवेश श्रृंखलाओं को तोड़ने के लिए।
मैं अवचेतन के महल में खड़ा था
मैं फूलों से झिलमिलाता हुआ सज रहा था,
मैं वहाँ खड़ा था
सूरज की रोशनी भीग सी गई थी।
मैं पक्षियों को चहकते हुए सुन रहा था,
संध्या गीत गाने के बाद,
मेरी माँ मंत्रों का उच्चारण कर रही थी,
कुत्ते भौंक रहे थे,
और नदियों में मछलियाँ
लहरों के साथ नृत्य कर रहीं थीं,
उनका स्पर्श मात्र प्रेमियों के लिए
लक्ष्य निर्धारित कर रहा था
और इस सुंदर दृश्य में,
रंगों को जोड़ने वाला
एक ज्वलंत इंद्रधनुष सामने दिखाई दे रहा था।
मैंने कभी भी इस खूबसूरती को नहीं देखा,
मैं हाँफने लगा था,
आसमान साफ था,
बादलों का निर्माण,
आकाशगंगाओं की कल्पना
मैंने केवल अपनी मेधा में की थी।
ऐसा लग रहा था
कि रेत दो शरारती भाई-बहनों की तरह
लहरों के साथ खेलती हुई
पंखों के साथ उड़ रही थी
पेड़ नाच रहे थे
और हवा सीटी बजा रही थी,
पत्तियाँ एक माधुर्य पैदा करती थीं,
जो एक-दूसरे पर फिसलती थीं।
मैं शांति से खड़ा था,
प्रकृति अपने सबसे अच्छे स्थान पर थी,
यह एक लॉकडाउन था,
हम उपचार कर रहे थे,
हर कोई इस तरह से बहाल कर रहा था,
यह हम सभी के अंदर युद्ध छेड़ रहा था
यह डर, घबराहट,
चिंता और अवसाद था।
मैं चढ़ाई कर रहा था,
मेरा सिर अंदर जोर से चिल्ला रहा था,
चीजों को तोड़ रहा था और कोस रहा था,
जंजीरों में रूपकों को बुन रहा था।
मैं देख रहा था आज,
आशा की हल्की झलक है,
सुंदर प्रकृति और सूरज की रोशनी है,
सूरज फिर से उग रहा है।

मेरी दुनिया

श्रोहन (कृष्णा मिश्रा)
बी. ए. अर्थशास्त्र (विशेष) द्वितीय वर्ष

अक्सर मैं बच्चे सा, बच्चों के साथ रहता हूँ..
दिल से हँसता और खुल कर रोता हूँ
नहीं पसंद यह होशियारों की दुनियाँ
जहाँ हँसी और आँसू, हथियार हैं
जहाँ मतलब का प्यार है
जहाँ दिल में भी दिमाग है...
हाँ हाँ, कभी नहीं..
निमंत्रण अस्वीकार करता हूँ
दिमागी हुकूमत नकारता हूँ
हूँ खुश मैं अपनी दुनियाँ में
जहाँ दिल की पुकार सुनता हूँ !

देश भक्ति कविता

राम वीरेश यादव

देश की माटी में उपवन का ऐसा फूल खिला देंगे।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे।।
तीन रंग से सजा तिरंगा सब की याद दिलाता है।
हिंद महासागर जैसा ये लहर लहर लहराता है।।
मन में मेरे उथल-पुथल सबको यह बतला देंगे।।।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे।
देश की माटी में उपवन का ऐसा फूल खिला देंगे।।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे।
मेरी माँ और धरती माँ में इतना सा है फर्क ये पाया।
एक ने मुझको जन्म दिया दूजी ने मुझको अन्न खिलाया।।
जान से ज्यादा प्यार करें हम दुश्मन को सिखला देंगे।।।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे।
देश की माटी में उपवन का ऐसा फूल खिला देंगे।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे।
रात गई दिन निकला है ओ सूरज ने पंख पसारे।
मधुर प्रेम से गोद बिठाकर माँ बिटिया के बाल सँभारे।
माँ के आंचल को न छोड़ो हम भी ये बतला देंगे।।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे।
देश की माटी में उपवन का ऐसा फूल खिला देंगे।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे।।
भारत माँ के आंचल के जज्बे बड़े निराले हैं।
आँच आए जब आंचल पर तो शहीद हुए दिलवाले हैं।।
अंग अंग और रोम रोम में जय हिन्द जगा देंगे।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे ।।
देश की माटी में उपवन का ऐसा फूल खिला देंगे।
मातृभूमि के आंगन में हम ज्ञान का दीप जला देंगे।।

चमत्कार

अलका तनीशा

प्रातः काल का समय था। मैं उठी तो देखा कि मैं अपने कमरे में नहीं हूँ। घर में विचित्र सी शांति थी। मैं बाहर गई तो सब आंगन में खड़े थे। ऐसा लग रहा था कि किसी की प्रतीक्षा कर रहे हों। मैं तब संभवतः चार वर्ष की भी नहीं रही होंगी। मैं माँ को ढूंढ़ने लगी। माँ आंगन में नहीं थी। हमारे कमरे में पर्दा लगा हुआ था। कोई मुझे रोक पाता कि मैं झटपट माँ को देखने हमारे कमरे में गईं। मैंने पर्दा खोलकर उत्सुकता पूर्वक देखा तो मेरी सांसें थम गई। मैंने देखा कि माँ बेसुध पेटीकोट और ब्लाउज पहने जमीन पर पड़ी है। अम्मा माँ के बगल में बैठी थी। एक और महिला मां की दूसरी ओर चाकू हाथ में पकड़े बैठी थी। माँ के आसपास लहू बह रहा था। मैं दौड़ते हुए घर के बाहर जाने लगी तभी मुझे पिताजी मिल गए। मैं उनसे भय और पीड़ा के मारे जा चिपकी और बहुत ही वीभत्स स्वर में अश्रु की नदियां बहाते हुए बोली "माँ को मार डाला!!"।
पिताजी ने मुझे गोद में उठाया और बोले "नहीं बेटा ठीक है'। परंतु मैंने जो दृश्य आंखों से देखा उसको ही सच मान लिया था। रोते-रोते मैं सो गई। संध्या का समय था। मैं उठी इस बात के साथ की मां मर चुकी है। मैं फिर आंगन में गई। उसके बाद जो मैंने देखा वह चमत्कार था। वह आंगन में थी हँस रही थी। मैंने

असीम प्रसन्नता के साथ पूछा "आप जिंदा हो?" माँ ने उत्तर दिया "हां!! मैं मरी नहीं।" उस समय मुझे मेरी उजड़ी हुई दुनिया वापस मिल गई थी। उन्होंने बोला "अब तुम कमरे में जा सकती हो। कुछ है कमरे में तुम्हारे लिए'। मैं खुशी-खुशी अपने कमरे में गई। कमरे में बिस्तर को छोड़कर अब एक खटिया भी पड़ी हुई थी। मैंने खटिया में बैठ कर पाया एक छोटी सी बच्ची सफेद कपड़े में लिपटी हुई है। माँ अंदर आई और बोली "तुम्हारी छोटी बहन है वह"। मैं और खुश हो गई। सोने पर सुहागा हो गया था। भगवान ने मुझे मेरी माँ के साथ-साथ बहन भी दे दी थी। मैं अपने आप को सबसे अधिक भाग्यशाली समझ रही थी। मैं अब अकेली नहीं थी। खुशी के कारण साथ मैं सातवें आसमान में उड़ने लगी थी। यह सब सोचकर मैं अपनी बहन को खिलाने लगी और माँ से बातें करने लगी।

मैं हिन्दी हूँ!

यशराज गुप्ता
बी.एससी. नृविज्ञान, प्रथम वर्ष

चलो किसी ने तो मुझे जाना,
मेरी महत्ता तथा मजबूरी को पहचाना।
अब तुम सब सुनोगे मेरी कहानी,
जिसके कारण तुम खेलते थे राजा-रानी।
तो सुनो मैं हिंदी हूँ।
तुम्हारी जिंदगी में कई लोगों ने तुम्हारा दिल तोड़ा,
पर मैंने बचपन से अब तक तेरा साथ ना छोड़ा।
जानती हूँ तुम मुझे भूलना चाहते हो,
दूसरी भाषाओं को बोलना चाहते हो।
ठीक है! सुनो मैं हिंदी हूँ।
ना जाने क्यों लोग अब मेरे इस्तेमाल पर हँसते हैं ,
अगर मैं निकलने की कोशिश भी करूं तो मुझे दबा देते हैं।
बड़े क्या, अब तो बच्चे भी मुझसे घृणा करते,
मुझे बोलने से अब वे भी डरते|
अच्छा सुनो मैं हिंदी हूँ।
वह भाषा जो तुम्हारी गलती पर संभालती ,
आज उसे बोलने में लोग करते बेज्जती।
जिसने तुम्हें सदा सिखाई तुम्हारी संस्कृति तुम्हारी संस्कृति ,
क्यों नहीं समझते तुम आज उसकी स्थिति।
सुनो! मैं हिंदी ही हूँ।
मैं अपनी तारीफ नहीं करना चाहती,
कुछ सालों के दबे हुए जज्बातों को तुम्हें सुनाती।
पता है तुम्हें , दूसरी भाषाएं मुझ पर हँसती,
"तेरे अपने ही तुझे नहीं चाहते" यह कह कर मुझे सताती ।
फिर भी मैं कहती, कि मैं ही हिंदी हूँ ।
जब मेरे अपने देश के लोग ही मुझे नहीं समझते,
तभी तो सारी भाषाएं मेरी सदा आलोचना करते।
सभी भाषाएं अपने देशों में प्रसिद्ध हो रही,
ना जाने क्यों बस एक मैं ही हूँ जो दबी जा रही।
तो क्या मैं हिंदी हूँ?
मेरी तुम लोगों से कोई शिकायत नहीं, तुम जो कहोगे वही होगा सही।
कोई मुझे समझे तो बस उस पर हँसना नहीं,
कोई मुझे बोलना चाहे तो कृपा कर उसे दबाना नहीं।
मेरी कभी पूरे विश्व में प्रशंसा करना नहीं ,
अगर मैं भविष्य में न रहूँ तो बस याद कर लेना तभी,
बच्चों को मेरे बारे में बताना अगर तुम्हें लगे सही।
बस अगर मेरी प्रशंसा नहीं कर पाए,
तो आलोचना मत करना तुम सभी।
धन्यवाद मेरी बातों को सुनने के लिए,
"हिंदी से था हिंदुस्तान" बस यह सदैव याद रखिए।
जिसके कारण इतिहास के महापुरुष तथा महाग्रंथों में प्रचलित हुई थी,
आज वही तन्हाई में कहीं पीछे छुप गई।
तो, क्या मैं एक हिंदी थी कभी?

कोई और

अंतरिक्ष श्रीवास्तव
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

मैं नहीं चाहता
उसके मस्तक को कोई और चूमे
मैं नहीं चाहता
उसकी हथेली को अपने हांथो की
रेखाओं से जोड़ कर
एक लंबे सुनसान रास्ते
पर कोई और चले
ठहर कर ....
मांशपेशियों पर जोर
देते हुए
मैंने उससे पूछा
आखिर कौन है ?
ये कोई और
उसने कहा.....भय
मुझे खो देने का भय ही है कोई और।

रास्ता

यशराज गुप्ता
बी.एस. सी. एंथ्रोपोलोजी प्रथम वर्ष

वो रास्ता ही है ना?
जहाँ से एक एंबुलेंस गया होगा,
जिसमें कोई जिंदगी-मौत के बीच होगा।
जहां से कभी कोई जिंदा ,
तो कोई मर कर गुजरा होगा।

वो रास्ता ही है ना?
जिसमें एक ममता भरी माँ ,
अपने बच्चे से मिली होगी।
वहीं दूसरी ओर एक बूढ़ी औरत,
घर से निकाली गई होगी।

तू वो रास्ता ही है ना?
जिस पर चलकर कई लोग ,
अपनी जिंदगी की मंजिल पाए होंगे।
और कई उसी पर ,
अपनी किस्मत को कोसते होंगे।

यह वो रास्ता ही है ना?
जहां दो दिल मिले होंगे ,
वहीं दो दिल बिछड़े भी होंगे।
जिसपर तुम चलके बच्चे से बड़े हो जाते ,
और समय के साथ जिम्मेदारियों से भर जाते।

वो रास्ता ही है ना ?
जिस पर तुम दोस्तों के साथ साइकिल चलाते थे ,
और आज कार पर अकेले ही चले जाते हो।
जहां से तुम स्कूल जाते थे ,
आज नौकरी पर वहीं से जाते हो।

फिर तो वो रास्ता ही है ना ?
जिसपर चलके सब बदल गए,
पर वह आज तक उसी जगह है।
जिसमें तुम हमेशा थूकते कचरा फेंकते,
फिर भी इसकी स्वच्छता को कभी नहीं समझते।

आखिर वो रास्ता ही है ना ?
जिसके बारे में तुम कभी नहीं सोचते,
ना कभी इस पर कुछ लिखते।
पेड़ ,फूल और आदमी के बारे में तुमने काफी कविताएं पढ़ीं,
एक बार इस रास्ते पर भी पढ़ो।

समझे वो रास्ता है ना!
जो हमें जीवन की मूल्यवान चीजों के बारे में बताता,
कितने मौसम बदले, लोग बदले पर यह नहीं बदलता।
कितना भी भार पड़ा,
पर वह हमेशा हिम्मत रखो।
तुम इसे गलत भी समझते,
पर यह तुम्हें सदा सही राह दिखाता।
सांसारिक मोह में कभी ये बंधा नहीं, इसलिए ये रहा हमेशा सही।
ये तुम्हारे लिए बहुत जरूरी है ना ,
तो इसे साफ रखने की जिम्मेदारी भी हमारी है ना।
आखिर , यह हमारा रास्ता ही है ना!

मैं काल हूँ

शिवम सिंह

मैं काल हूँ, विकराल हूँ, मैं निष्कंटक जाल हूँ।
मैं शब्द हूँ, मैं अर्थ हूँ, मैं प्रश्न हूँ,मैं उत्तर हूँ।
मैं प्रेम हूँ, मैं लोभ हूँ, मैं मोह हूँ,मैं लालसा हूँ।
मैं तीव्र हूँ, मैं शांत हूँ, अक्रोध हूँ, मैं क्रोध हूँ।
मैं शुद्ध हूँ, अशुद्ध हूँ, प्रबुद्ध हूँ, मैं क्रुद्ध हूँ।
मैं पाप हूँ, मैं पुण्य हूँ, मैं धर्म हूँ, अधर्म हूँ।
मैं सत्य हूँ, असत्य हूँ, मैं कर्म हूँ, अकर्म हूँ।
मैं सतयुग का सुंदर।

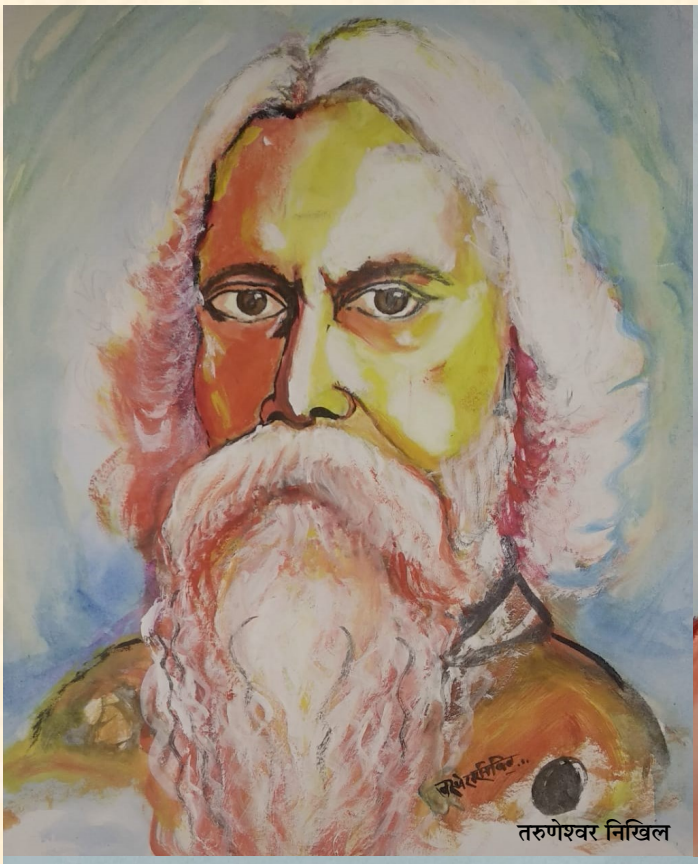

तरुणेश्वर निखिल

तरुणेश्वर निखिल

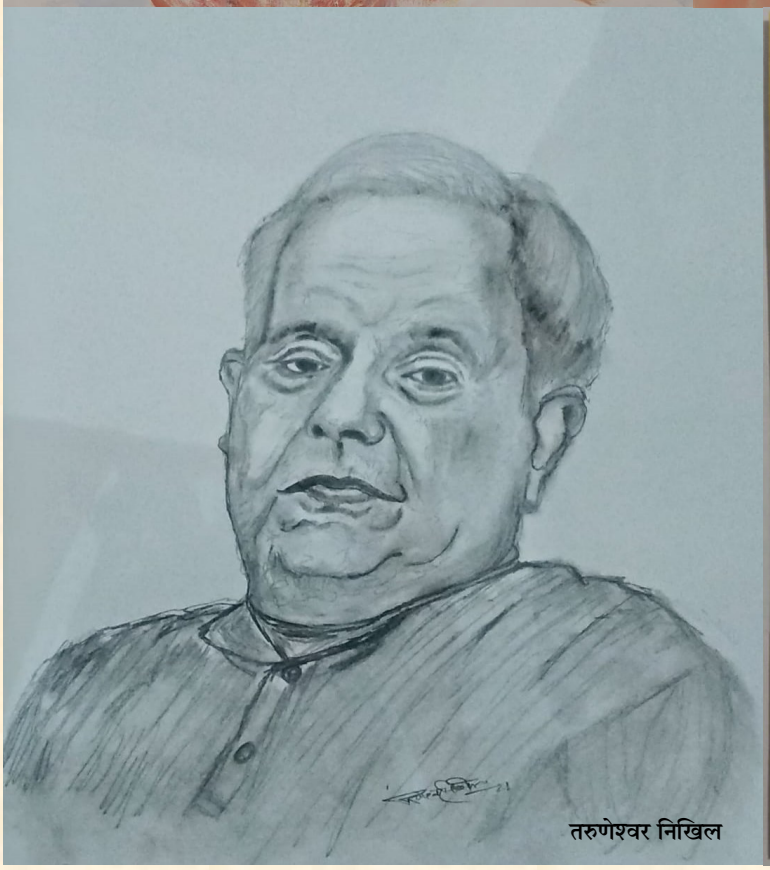

तरुणेश्वर निखिल

मुस्कान रफ़िक

संपादकः

-डॉ. सन्ध्या राठौर

विद्यार्थिसम्पादकदलम्

-हर्षिता खुशी बिरजी

-प्रवीण कुमार पीयूष

विषयसूची

१) न हि सर्वः सर्वं जानाति — हर्षिता खुशी बिरजी

२) चीनदेशे बौद्धधर्मप्रचारः — राहुल कुमार

३) भारतीयनृत्यानि — राहुल

४) कापि नास्ति सदृशं तव — प्रवीण कुमार पीयूष

५) परोपकारिणः वृक्षाः — शिवांशी मिश्रा

६) शिक्षायाः लक्ष्यप्राप्तिः — अंकित आर्य

७) सामाजिकसञ्जालस्थलो निजता च — प्रवीण कुमार पीयूष

८) किं सर्वत्र फलति भाग्यं विद्या वा — नेहा कुमारी

९) जीवनकाले मित्रस्य महत्त्वम् — तरुण पाण्डे

१०) तर्कसिद्धा सत्यवादिता — बृजेंद्र पाण्डे

११) एहि हसामः — कौशलपति मिश्र

१२) कष्टं निर्धनजीवनम् — प्रीति कुमारी

१३) शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम् — प्रिया

१४) एहि एहि वीर रे समर्पितम् — वैशाली कश्यप

१५) नारीशिक्षायाः महत्त्वम् — नेहा कुमारी

१६) वसन्तपञ्चमी — आदित्य सिंह

१७) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्— प्रिया द्विवेदी

१८) सत्संगतिः — सुभाष झा

१९) वैदिकवाङ्मये पाश्चात्यविदुषां योगदानम् — विवेक कुमार

२०) मूर्खः वानरः — जसवन्त

न हि सर्वः सर्वं जानाति

हर्षिता खुशी बिरजी

बी.ए. संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

मुद्राराक्षसमिति प्रसिद्धस्य नाटकस्य प्रथमेऽङ्के इयमुक्तिः "न हि सर्वः सर्वं जानाति"। तत्र यदा चरः चाणक्यस्य शिष्यं कथयति यत् सः तस्य गुरुं धर्मम् उपदेष्टुम् इच्छति। तदा शिष्यः तं पृच्छति — "भवान् मम गुरोः अधिकं जानाति वा?" तदैव चरः वदति यत् न हि सर्वः सर्वं जानाति। किञ्चित् तु तव गुरुः जानाति परं किञ्चित् तु अहमपि जानामि। इयमुक्तिः मह्यं रोचते। जगति ज्ञानमेव शाश्वतमस्ति। "न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" इति श्रीमद्भगवद्गीतायामपि श्रीकृष्णेन कथितम्। एवं संसारे अनेके ज्ञातव्याः विषयाः सन्ति। अस्माकं परमतपस्विनः महर्षयः विविधानां ज्ञानविज्ञानविषयाणां निर्माणं केवलं सर्वेषां कल्याणार्थं कृतवन्तः।

अद्यत्वे केवलं कुक्षिपूरणार्थम् अध्ययनं कुर्वन्ति बहवः जनाः। ज्ञानेन व्यवसायः व्यवसायाद् धनमिति क्रमशः व्यवहारः भवति। कोऽपि मनुष्यः सर्वेषु विषयेषु प्रवीणतां नैव सम्पादयितुं शक्नुवन्ति। ईश्वर एव समस्तविषयाणां ज्ञाता। शास्त्रज्ञानेन सह व्यवहारज्ञानम् अपेक्ष्यते। केवलं शास्त्रज्ञानं केवलं वा व्यवहारज्ञानं नैव हिताय। जीवने ज्ञानस्य आवश्यकता सदैव वर्तते।

यथा व्यवहारज्ञानेनैव व्यवहारः सम्यक् भवति तथैव अध्यात्मज्ञानेन मनुष्यः न केवलं स्वरूपं ज्ञातुं प्रयतते परं स्वजीवनस्य उद्देश्यमपि ज्ञातुं समर्थः भवति। अतः सम्यक् रूपेण ज्ञानम् अर्जितव्यम्। न कोऽपि मनुष्यः समस्तविषयाणां ज्ञाता भवितुमर्हति अतः सर्वप्रकारेण ज्ञानं स्वीकर्त्तव्यम्। संसारे विद्यमानं यद् ज्ञानमस्ति नैव वयं सर्वे ज्ञातुं शक्नुमः। कदाचित् जनाः वदेयुः यद् एषः जनः तु अयं विषयं न जानाति। तस्मिन् समये मनः कदापि मलिनं न करणीयम्। कथं मया ज्ञानं भविष्यति इति एव चिन्तनीयम्। अस्माकं तपोनिधयः महर्षयः बहूनि शास्त्राणि निर्मितवन्तः वयं सर्वे शास्त्राणि अध्येतुं नैव शक्नुमः परन्तु यथा हंसो अम्बुमिश्रितस्य दुग्धे जलं त्यक्त्वा दुग्धमेव स्वीकरोति तथैव वयं विविधशास्त्रेषु प्रतिपादितानां विषयाणां मध्ये तद् ज्ञानं स्वीकुर्मः यद् अस्माकं कृते आवश्यकम् उपयोगिनं च तं स्वीकृत्य एव अस्माभिः व्यवहर्तव्यम्। व्यवहारे अपि ज्ञानमपेक्ष्यते। यो हि ज्ञानवान् स एव मनुष्यः सम्यक् व्यवहारं कर्तुं शक्नोति। तेनैव अस्माभिः श्रेष्ठानि कार्याणि कर्तव्यानि। स्पष्टमेव जीवने ज्ञानं विना कोऽपि कार्यं नैव भवति। अतः अस्माभिः ज्ञानम् अर्जितव्यम्।

चीनदेशे बौद्धधर्मप्रचार:

राहुल कुमार
एम.ए.संस्कृत (उत्तरार्ध)

बौद्धधर्मस्य प्रादुर्भाव: भारतवर्षस्य पवित्रधरायां बभूव। भगवान् बुद्ध: अस्य पवित्रधर्मस्य संस्थापको वर्तते। अस्य जन्म ई०पू०५६३ तमे वर्षे शाक्यानां कपिलवस्तुप्रदेशस्य समीपे लुम्बिनीग्रामे बभूव। अस्य पितु: नाम शुद्धोदन: मातु: च नाम महामाया आसीत्। अस्य पवित्रधर्मस्य भारतवर्षे भारतवर्षात् च बहि: प्रचारस्य इतिहासो विद्यते। राज्ञा अशोकेन आदौ अस्य विपुलप्रचार: चक्रे। स: स्वपुत्रं महेंद्रं पुत्रीं च संघमित्रां च सर्वप्रथमं प्रचारार्थं लंकाद्वीपं प्रेषितवान्। तत: बौद्धधर्म: दक्षिण-एशियां प्राप्तवान्। एतेषु देशेषु हीनयानधर्मस्य प्रधानता अस्ति। भारतवर्षस्य समीपे चीनदेशे महायानधर्मस्य प्रधानतास्ति। भारतवर्षे राज्ञ: कनिष्कस्य शासनकाले अयं धर्म: चीनदेशे प्रचारित:।

चीनदेशे एका दन्तकथा प्रसिद्धा अस्ति यत् ६८ ई० राजा मिडगटी एकं स्वप्नं ददर्श। तस्मिन् स्वप्ने स: अपश्यत् यत् एक: उड्डयमान: सुवर्णपुरुष: राजप्रासादे प्राविशत्। स: स्वस्वप्नस्य अभिप्रायं सभाजनान् पृष्टवान्। ते ऊचु: यत् इयं भारतदेशे महात्मन: बुद्धस्य आगमनस्य सूचना अस्ति। फलत: राजा भारतवर्षात् बौद्धाचार्यम् आनेतुं स्वराजदूतान् प्रेषितवान्। ते इत: काश्यपमातंगं धर्मरत्नं च आचार्यद्वयं चीनदेशं नीतवन्त:। बौद्धधर्मस्य चीनदेशे अयम् आद्यप्रवेश: बभूव। चीनीपरिव्राजकानां भारतीयपण्डितानां साहित्यिकोद्योगस्य अयं काल: पञ्चमशताब्द्या: प्रभृति फाहियान: भारतभ्रमणं कृत्वा बौद्धस्थानानां च निरीक्षणं कृत्वा बौद्धधर्मं ज्ञातवान्। ह्वेनचांग: इचिंग: च अस्मिन् प्रसंगे उल्लेखनीयौ वर्तेते।

ह्वेनचांग:-

अनेन विदुषा यात्रिणा ७५ प्रामाणिकबौद्धग्रन्थानाम् अनुवादं कृतम्। सकला: अपि ये ग्रन्था: प्राय: विज्ञानवादमतेन सम्बद्धा: सन्ति। तस्मिन् समये भारते अस्य मतस्य प्रतिष्ठा आसीत्, नालन्दानगरे अस्य प्रधानता आसीत्।

इचिङ-

अयं ह्वेनचांगस्य पश्चात् भ्रमणार्थं भारतवर्षम् आजगाम। एष: सर्वास्तिवादमतस्य पोषक:। अस्य यात्राग्रन्थ: महत्त्वपूर्ण: विद्यते। अस्मिन् ग्रन्थे ७० चीनीयात्रिणां वर्णनमस्ति। अस्मात् पूर्वं परं च अनेके बौद्धधर्मजिज्ञासव: यात्रिण: भारतवर्षे आगच्छन्ति स्म। प्रचारस्य इच्छुका: अभिलाषिण: च बौद्धभिक्षुव: इत: चीनदेशं गच्छन्ति स्म। एतेषु कुमारजीव:, बुद्धयश:, धर्मरक्ष:, गुणवर्मन्, गुणभद्र:, बोधिधर्म:, संघपाल:, परमार्थ:, उपशून्य:, बोधिरुचि:, बुद्धभद्र:, बुद्धशान्तश्च प्रसिद्धा: सन्ति। एतेषु कुमारजीव: परमार्थ: च अत्यन्तप्रसिद्धौ आस्ताम्। चीनदेशे बौद्धधर्मप्रचारस्य अनयो: मुख्यं योगदानमस्ति।

कुमारजीव:-

अयं मूलत: भारतीय: नासीत्। स: चीनीदेशस्य तुर्किस्तानप्रदेशस्य कूचानगरस्य निवासी आसीत् अनेन १८ प्रामाणिकबौद्धग्रंथानां चीनीभाषायाम् अनुवाद: कृत:। अश्वघोष-नागार्जुन-आर्यदेव-वसुबंधु इति आचार्यचतुष्टयानां जीवनचरितमपि अनेन चीनीभाषायां लिखितमस्ति।

परमार्थ:-

चीनीबौद्धसाहित्यस्य इतिहासे अस्य नाम सदा स्मरणीयमस्ति। चीनदेशस्य धार्मिकनरेश: उटी भारतवर्षात् स्वसंस्कृतग्रन्था: आनेतुम् अनुचरान् प्रेषितवान्। तै: सह परमार्थोपि चीनदेशं गतवान्। तेन २० वर्षपर्यन्तं निरन्तरं परिश्रमेण ७० संस्कृतग्रन्थानां चीनीभाषायाम् अनुवाद: कृत:। तेषु अश्वघोषस्य 'महायानश्रद्धोत्पादशास्त्रम्' ईश्वरकृष्णस्य च सांख्यकारिका अपि स्त:।

अत: उपर्युक्तविवेचनेन इदं स्पष्टं भवति यत् भारतीयपण्डिता: बौद्धधर्मप्रचारार्थं विशालहिमालयं लंघयित्वा चीनदेशं गत्वा अश्रान्तपरिश्रमेण चीनीलिपे: तस्या: च भाषाया: अध्ययनं चकार। पुन: तै: स्वसंस्कृतग्रन्था: अनूदिता:। ते सर्वे प्रशंसनीया: आदरणीया: च। अद्यापि तेषां कीर्ति: न केवलं भारतवर्षे अपितु चीनदेशे अपि राजते।

भारतीयनृत्यानि

राहुल
बी.ए.संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

गीतं वाद्यं नृत्यं च त्रयं संगीतमुच्यते।
नृत्यं वाद्यानुगमं प्रोक्तं वाद्यं गीतानुवर्ति च॥

नृत्यं मनसः प्रसन्नतां प्रकटीकर्तुम् एकं स्वभाविकम् उत्कृष्टं साधनम् अस्ति। कोपि कस्यापि कारणात् यदा कदा प्रसन्नो भवति तदा सः विविधेभ्यः शारीरिकक्रियाभ्यः तां प्रसन्नतां प्रकटीकरोति। तदा आङ्गिकेभ्यः चेष्टाभ्यः स्वानन्दं दर्शयति। तदेव नृत्यं कथ्यते। किन्तु केवलं हस्तपादानां संचालनमेव नृत्यं नास्ति। नृत्ये तु रसभावलयतालाभिनयानां सम्मेलनं भवति। संगीतस्य गायनवादननर्तनानि इति त्रीणि अङ्गानि सन्ति। यदि नृत्येन सह गायनवादने भवति तर्हि नृत्यं शोभते।
इयं भारतीया मान्यता अस्ति यत् नृत्यस्य उत्पत्तिः भगवतः शिवात् अभवत्। स एव विविधाः नृत्यमुद्राः रचितवान्। तदा तण्डुमुनिं नृत्यं शिक्षितवान्। तण्डुमुनिः भरतं शिक्षितवान्। भरतः स्वशिष्यान् पुत्रान् च नृत्यं शिक्षितवान् तदा ते संसारे नृत्यशिक्षायाः प्रचारं कृतवन्तः। शिवस्य इदं ताण्डव इति नाम्ना प्रसिद्धम् अभवत्। आचार्यभरतमुनेः ग्रन्थे 'नाट्यशास्त्रे' एतस्य नृत्यस्य विस्तृतं वर्णनं प्राप्यते।
देवी पार्वती 'लास्य' इति नृत्यं रचितवती। एतस्य नृत्यस्य वर्णनं शारंगदेवस्य 'संगीतरत्नाकर' इति ग्रन्थे अस्ति। ताण्डवः पुरुषप्रधानः नृत्यम् अस्ति। लास्यः स्त्रीप्रधानः नृत्यम् अस्ति। भारतस्य प्रत्येके नृत्यप्रकारे ताण्डवलास्ययोः छविः प्रतीयते।
भारतीयपरम्परायां नृत्यस्य द्वौ प्रकारौ स्तः। तौ लोकनृत्यं शास्त्रीयनृत्यं च। यत् नृत्यं सामान्यग्रामीणजनैः कमपि उद्दिश्य क्रियते यत् वा नृत्यं लोके प्रचलितः भवति तद् तु लोकनृत्यं भवति। यथा फागः, लूरः, गरबा, डोमकच इत्यादयः।
यत् नृत्यं विशेषैः नियमैः सह प्रस्तूयते तत् शास्त्रीयनृत्यं भवति। भारतसर्वकारेण अष्ट शास्त्रीयनृत्यानि स्वीकृतानि सन्ति। तेषु उत्तरभारते कथक इति, तमिलनाडुप्रदेशे भरतनाट्यम् केरलप्रदेशे कथकली मोहिनीअट्टम् च इति, आंध्रप्रदेशे कुचिपुड़ी इति, उड़ीसाप्रदेशे ओड़िसी इति, मणिपुरप्रदेशे मणिपुरी इति, असमप्रदेशे च हॉट्रिया इति शास्त्रीयनृत्यानि प्रचलितानि सन्ति।
शास्त्रीयनृत्यस्य विधासु द्वौ भेदौ स्तः। तयोः एकः 'ताण्डवः' अपरं च 'लास्यः' स्तः।
ताण्डवनृत्यम्—

वीररसे महोत्सहो पुरुषो यत्र नृत्यति।
रौद्रभावरसोत्पत्तिः तत्ताण्डवमिति स्मृतम्॥

यत्र पुरुषः रौद्रवीरभावैः नृत्यति तत् ताण्डवम्। ताण्डवनृत्ये विश्वस्य पञ्चस्थितयः सन्ति – सृष्टिः, स्थितिः, तिरोभावः, आविर्भावः, संहारश्च इति। एकदा त्रिपुरासुरस्य वधं कृत्वा भगवान् शिवः यत् नृत्यं कृतवान् तत् ताण्डव इति नाम प्रसिद्धो बभूव।
लास्यनृत्यः—

यौवनस्त्री विलासिन्यः कामभाव विलक्षणा।
पदंगहारवैदध्यात कुर्युलास्यमदिरितः॥

यत्र अंगपादसंचालनेन श्रृंगाररसप्रधानं नृत्यं स्त्रीभिः क्रियते तदेव लास्यः अस्ति। त्रिपुरासुरस्य वधं कृत्वा यदा शिवः पार्वत्याः समीपे गतवान् तदा सा यत् नृत्यं कृतवती तदेव लास्यः बभूव। इदं श्रृंगाररसप्रधानं नृत्यं स्त्रीभिः क्रियते। 'मणिपुरी' इति शास्त्रीयनृत्यं पूर्णरूपेण लास्यः अस्ति।
भारतवर्षे विविधानि नृत्यानि सन्ति तेषु लोकनृत्यानि शास्त्रीयनृत्यानि कानिचित् जनजातीयनृत्यानि अपि सम्मिलिताः सन्ति। प्राचीनकालतः अद्यपर्यन्तं संगीते विविधानि परिवर्तनानि अभवन् किन्तु तस्य आत्मा तु अद्यापि एका एव अस्ति।

कापि नास्ति सदृशं तव

प्रवीण कुमार पीयूष
बी.ए. संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

कथयाम्यहं सत्यम्
करोषि त्वं सन्देहम्।
को न जानाति ते सुन्दरताम्
कथयन्ति कवयस्ते सुन्दरताम्॥

कुर्वन्ति निर्माणं चित्राणां
दृष्ट्वा चित्रकारास्त्वाम्।
गायन्ति गायकास्ते सुन्दरताम्
लिखन्ति लेखकास्ते सुन्दरताम्॥

त्वामपश्यद् यः
पर्याकुलोऽभवद् सः।
छुरिकया सदृशं तव नेत्रे
बाधेते ते पश्यति यः॥

भासते चन्द्रमसा सदृशम् आननं तव
भवति मन्त्रमुग्धं पश्यति यः।
त्रपते अपि अप्सरः ते सुन्दरतया
प्रतिस्थापयन्ति हृदयेषु सर्वे त्वाम्॥

को न जानाति ते सुन्दरताम्
कापि नास्ति सदृशं तव॥

परोपकारिणः वृक्षाः

शिवांशी मिश्रा
बी.ए.संस्कृत (विशेष) प्रथम वर्ष

वृक्षेषु हि कुर्वन्ति विहगाः नीडान्
केनचिद् तु क्रियते काष्ठे हि छिद्रः।
आतपे तिष्ठति वर्षानुवर्षम्
अन्येषां करोति छायाप्रदानम्॥

जलवातप्रकाशैः निर्मात्यन्नम्
तेन ह्यन्नेन वर्धते नित्यम्।
वृक्षस्य दृश्यतां सर्वं हि कार्यम्
जीवनं तस्यास्ति परोपकारार्थम्॥

पुष्पं सुन्दरमतीव मोहकम्
पुष्पं तस्य भवति देवपूजार्थम्।
फलं रसमयं तस्य फलं स्वादपूर्णम्
फलं ह्यस्ति खगस्यान्नम्॥

वृक्षैः नैव खाद्यते स्वकीयं फलम्
सर्वं ह्यङ्गं तस्य लोकहितार्थम्।
जनाः न स्मरन्ति तस्योपकारम्
बहुधा कुर्वन्ति वृक्षच्छेदनम्॥

शिक्षायाः लक्ष्यप्राप्तिः

अंकित आर्य

एम.ए.संस्कृत (पूर्वार्ध)

प्रयोजनं विना मन्दोऽपि न प्रवर्त्तत इति शिक्षाया अपि प्रयोजनं स्यात्। शिक्षायाः किं लक्ष्यं स्याद् इति अस्माभिः चिन्तनीयम्। "शिक्ष् विद्योपादाने" इति धातोः शिक्षाशब्दस्य सिद्धिः। विद्याया उपादानग्रहणं स्वीकरणं शिक्षेति यावत्। विद्यायाः किं प्रयोजनमिति जिज्ञासा "सा विद्या या विमुक्तये" इत्युत्तरम्। कीदृशीयं मुक्तिर्या शिक्षया काम्यते ? मुक्तिः मरणोत्तरं भवति। इह कोऽयं मोक्षः मुक्तिर्वा यः शिक्षया विद्यया वा काम्यते?

दुःखान्मुक्तेः, अज्ञानाद् मुक्तेर्वा शिक्षया काम्यते। यदा मानवः जायते सः ज्ञानरहितः भवति। ज्ञानरहितः मानवः पशुवत् भवति। आजीवनं स पशुरेव स्याद् यदि शिक्षितो न भवेत्। ज्ञानं विना दुःखनिमग्नाः च सर्वे प्राणिन इह दृश्यन्ते। न हि कोऽपि सर्वथा सुखी दृश्यते संसारे। सर्वस्वत्यागी तपस्वी प्रवरो बुद्धस्त्वाह "सर्वं दुःखं, सर्वं दुःखमिति। दुःखबहुलोऽयं संसार इति सर्वैः अनुभूयत एव। अस्य दुःखस्य नाश एव शिक्षायाः प्रयोजनम्। कथमिदं दुःखं आगतम्? अज्ञानाद्। अज्ञानेन हि कामक्रोधादिभिः दोषैः युक्ताः मानवाः दुःखं प्राप्नुवन्ति। तद् अज्ञानमेव दुःखस्य कारणम्। अस्माद् दुःखान्मुक्ति एव शिक्षायाः प्रयोजनम्। सा च ज्ञानेन सम्भवति। अत एव उक्तं ज्ञानान्मुक्तिः। ज्ञानादेव मानवाः सुखिनः भवितुमर्हन्ति नान्यथा।

अद्यत्वे तु शिक्षाया लक्ष्यमेव परिवर्तितं शिक्षितैर्मनुष्यैः। अद्यतनीया शिक्षा तु व्यवसायोन्मुखी, न मानवनिर्माणोन्मुखी। धनप्राप्तिरेव वर्तमानशिक्षायाश्चरमं लक्ष्यम्। न इदं समीचीनम्। धनप्राप्तये बहव उपाया विद्यन्ते संसारे। अतो धनप्राप्तिरेव शिक्षाया लक्ष्यमिति सर्वैः मन्यते।

"विद्याविहीनः पशुभिः समानः" इत्युक्तं नीतिकारैः। अयं पशुत्वविनाश एव शिक्षायाः परमं प्रयोजनम्। यः विद्यामधीत्यापि स्वपशुत्वं न जहाति निन्दनीयः सः। अक्षरज्ञानं न विद्या। विद्यया तु मनोबुद्धिशरीरात्मविकासः स्याद् न च दृश्यतेऽद्यत्वे लब्धाक्षरेषु मानवेष्विदम्। शिक्षिता अपि ते सर्वदुर्गुणसम्पन्नाः सन्ति पशुरिव आचरणं कुर्वन्ति घ्नन्त्यपहरन्ति च साधून्।

शिक्षिता अपि कुतोऽधर्ममाचरन्ति? नास्ति तेषु विद्याग्रहणस्य पात्रता। मर्कटस्य हस्ते लवित्रमिव तेषां मस्तिष्के विद्या भवति। विद्यया ते मर्कट इव अस्थिरीभवन्ति न तु मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति। अपात्रे विद्या न दातव्या इति नीतिकाराः मन्यन्ते। भगवता यास्केन इमे श्लोका निरुक्ते समुद्धृताः - विद्या ह वै ब्राह्मण मा जगाम गोपाल मा शेवधिष्टेऽहमस्मि। असूयकायनृजवेऽयताय न मा ब्रूया वीर्यवती यथा स्यात्। एतेभ्यो विद्या न दातव्या इति शास्त्रवचनम्। के च विद्यामधिगच्छन्तीति प्राह यास्कः "यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम्। यस्तेन द्रुह्येत्कतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन्"।

अद्यत्वेऽनधिकारिभ्यः शिक्षा दीयतेऽतः एवेयं दुर्दशा सर्वत्र दृश्यते। शिक्षाया लक्ष्यं तु मानवनिर्माणमासीत्, किन्तु तिरोहितं तदद्यत्वे। अद्यतनीयाः स्तनन्धया अपि शिशवः शिक्षाम् अधिगम्य परं प्रावीण्यमुपयान्ति। भवति तेषां मस्तिष्कविकासः शिक्षया न तु मानसिक आत्मिको वा विकासस्तत्र जायते। विकासेन विना शिक्षितोऽपि मानवः साक्षात्पुच्छविषाणहीनः पशुरिवाचरति। स्वस्वार्थाय स परहितं हन्ति। अनया शिक्षया तेषां सम्पूर्णजीवनविकास एव न भवति चरमलक्ष्यस्य मोक्षस्य तु का कथा।

अन्या या इयं विडम्बना यदद्यत्वे शिक्षा शिक्षणालयेषु दीयते न तु गृहे पितरौ स्वबालकान् शिक्षयतः। मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद इति शास्त्रवचनं तु अद्यत्वे दिवं गतम्। धनलाभाय विविधकार्येषु व्यापृताः पितरौ तु स्वबालान् गृहे न शिक्षयतः समयाभावाद्। अद्यत्वे तु मातृणामपि इयं दशा। ता अपि पितृवदेव च धनान्यार्जयन्त्यः स्वशिशून् न लालयन्ति न पालयन्ति न च शिक्षयन्ति। गृहेषु निरक्षराः सेवका एव तेषां लालन-पालनं कुर्वन्ति। अस्यामवस्थायां का कथा मानवनिर्माणस्य? धनपरायणेऽस्मिन् काले शिक्षाया लक्ष्यमपि धनमेव सञ्जातम्। नेदं युक्तम्। शिक्षाया लक्ष्यं मानवनिर्माणं, समग्रमानवनिर्माणमस्ति। यदि शिक्षया मानवस्य सर्वविधोन्नोतिर्न भवति तदा किमनया लक्ष्यहीनया शिक्षया। इयं चान्या विडम्बना यदियं लक्ष्यहीना शिक्षाऽप्यस्मिन् युगे प्रचुरधनसाध्या सञ्जाता। धनाभावे नैके मेधाविनो बालका अपि शिक्षणालयेषु उच्चशिक्षां न प्राप्तुं समर्थाः भवन्ति विद्वद्भिः इमे दोषाः परिहर्तव्या एव।

सामाजिकसञ्जालस्थलो निजता च

प्रवीण कुमार पीयूष
बी.ए.संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

अधुनैव व्हाट्सएप इति अनेन एका नूतना गोपनीयता नीति: प्रतिपादिता यस्य भारतवर्षे पूर्णरूपेण बहिष्कारोऽभवत् । अस्या: नवीनाया: गोपनीयताया: नीते: बहिष्कारस्य कारणम् एवमस्ति । 'व्हाट्सएप इति इदं फेसबुक इति अनेन सह जनानां सम्पूर्णसंवादानां सहकारितां करिष्यति' इति किञ्चित् कालात् पूर्वमेव चीनदेशस्य द्विशताधिका ऐप्स इति एतानि भारतीयसूचनाप्रौद्योगिकीमंत्रालयेन प्रतिबन्धितानि।

२१शताब्दीतमे वैश्वीकरणस्य युगे सामाजिकसञ्जालस्थलेन सम्पूर्ण: विश्व एकस्मिन् ग्रामे परिवर्तित: । अनेन सर्वजनानामेकीभूत: । अनेन विश्वे सूचनासञ्चारे नूतनायाम: प्रदत्त: येन स्वनिजताया: राष्ट्रीयनिजतयाश्च विषये प्रश्नचिह्नं युक्तम् । यदा वयं स्वदूरवाण्याम् एकम् ऐप इति इदं स्थापयाम: तदा ऐप इति अस्य नियमा अपि भवति, यान् वयं न पठाम: नियमान् च स्वीकुर्म: । येन अस्माकं निजताया: ज्ञानम् अन्ये अपि ज्ञातुं शक्नुवन्ति।

अद्य सामाजिकसञ्जालस्थल: अन्तर्जालस्याभिन्नोऽङ्गो वर्तते । विश्वे शतकोट्याधिकै: जनै: अस्य उपयोग: क्रियते । सामाजिकसंजालस्थलेन संसारस्य सर्वे जना: एकीभूता: परन्तु अयं महत्त्वपूर्ण: प्रश्नोऽस्ति यत् सामाजिकसंजालस्थलस्य प्रयोगसमये वयमस्माकं निजताया रक्षामो हननं वा कुर्म:?

प्राय: वयं सामाजिकसंजालस्थले स्वजीवनशैलिविषये प्रसारयाम: - वयं कुत्र गच्छाम:? किं खादाम:? केन सह भ्रमाम:? अस्माकं गृहे किं विद्यते? श्व: किं करिष्याम:? एवं च प्रकारेण वयं स्वनिजतां स्वयममेव सामाजिकसञ्जालस्थले वदाम: । अनेनानभिज्ञो जनोऽपि सर्वा: सूचना: प्राप्नोति।

२०१८तमे वर्षे बिहारप्रदेशस्य राजधान्यामेका चौर्यकार्यम् अभवत् । एकेन नवदम्पतिना विवाहानन्तरमेकं गृहं क्रीणितवान् । विवाहसामारोहस्य गृहस्य च चित्राणां सामाजिकसञ्जालस्थले प्रकाशितवान् । तदनन्तरं यदा तौ भ्रमणार्थं शिमला इति नगरे अगच्छताम् तयो: गृहे चौर्यकार्यमभवत् । यदा आरक्षकैरन्वेषणं कृतं तदा ज्ञातं यत् तयो: मित्रेणैव चौर्यकार्यं कृतम् तेन च मित्रेण फेसबुक इति माध्यमेन सर्वा सूचना प्राप्ता । एवं तयो: स्वनिजता फेसबुक इति अनेन माध्यमेन प्रकाशिता । अनया घटनया वयं जानीमो यत् स्वनिजता तु अतीव महत्त्वपूर्णा।

यत्र सामाजिकसञ्जालस्थलं समाजे सर्वेषां कृते भवति, तत्र कदाचित् जनानां शोषणस्य कारणमपि भवति । सामाजिकसञ्जालस्थले विशेषरूपेण महिलानां शोषणं भवति । अमेरिकादेशे इंग्लैण्डदेशे च सामाजिकसंजालस्थले शोषणं प्रतिदिनमेव भवति । एतौ देशौ 'साईबर रेप'-'साईबर बुलिंग'-इत्यादिभि: समस्याभि: आक्रान्तौ भवत: । सामाजिकसञ्जालस्थले यदा कदा महिलानां गरिमा हन्यते । अमेरिकादेशे यदा अफ्रीकामूलस्य युवकस्य मृत्युम् अभवत् तदा महती हिंसा अभवत् । अनया हिंसया बहवो जना: आहता: अभवन् । ट्विटर इति अनेन माध्यमेन जनै: महान् विरोध: कृत: । आधुनिकयुगे सामाजिकसंजालस्थलं यद्यपि अस्माकं कृते महत्त्वपूर्णमस्ति परन्तु अनेन अस्माकं निजताया अपि हननं भवति । सामाजिकसञ्जालस्थले साईबर-अपराधस्य भयमपि भवति।

भारतवर्षे प्राय: ६३.९ कोटिजना: अन्तर्जालस्य नियमितोपयोग: कुर्वन्ति । भारतस्य संविधाने स्वतंत्रता इति मौलिक: अधिकारो वर्तते । परं भारतवर्षे तस्या: कृते विशिष्टा: निर्देशा: नियमा: च न सन्ति अत: देशस्य नागरिकाणां कर्त्तव्यमस्ति यत् ते स्वनिजताया रक्षणं कुर्यु: । यद्यपि भारतस्य सूचनाप्रौद्योगिकीमंत्रालयेन नागरिकाणां डेटा अस्य सूचनासमूहस्य संरक्षणार्थमनेके निर्देशा: नियमा: च निर्धारिता: । तथापि व्यक्तिगतगोपनीयताया प्रकाशनम् अत्यवधानेन कुर्यु: । एतस्मिन् सन्दर्भे अस्माकं कर्तव्यमस्ति यत् स्वसम्बन्धिगोपनीयसूचना: सर्वत्र न प्रकटयितव्या:।

किं सर्वत्र फलति भाग्यं विद्या वा

नेहा कुमारी

बी.ए.संस्कृत (विशेष) प्रथम वर्ष

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

अस्माकं जीवने विद्या अति आवश्यकी महती च। विद्याविहीन: मनुष्य: पशुसमानोऽस्ति। अस्माभि: अस्माकं जीवने उत्तमं विद्यां प्राप्य उत्तमानि कार्याणि करणीयानि परन्तु वर्तमानकाले जना: कर्म विद्यार्जनं च त्यक्त्वा स्वभाग्यस्य उपरि विश्वसन्ति। "हा! मम भाग्ये इदमेव अस्ति। मम भाग्ये इदं नास्ति" इति ते एवं सदा कथयन्ति। ते सर्वदा स्वस्य भाग्यस्य विषये क्रन्दनं कुर्वन्ति। ते चिन्तयति- किमिदमेव सत्यमस्ति? किं करणीयम्? भाग्यं परिश्रम: वा? मनुष्याणां जीवनस्य विकासाय भाग्यं बलवद् अस्ति न वा? अस्मिन् विषये मम मतम् अस्ति यत् मनुष्यस्य चरित्रनिर्माणे जीवनस्य च विकासाय विद्या आवश्यकी। विद्यां विना मनुष्य: साक्षात् पशु: अस्ति परं तस्य पुच्छ: विषाणौ च न सन्ति। विद्यां प्राप्य एव मानव: श्रेष्ठं कार्यं कर्तुं समर्थ: भवति।

उदाहरणम् आश्रित्य स्पष्टीकर्तुम् इच्छामि। सीता गीता च द्वे बालिके आस्ताम्। तयो: द्वयो: सीता प्रतिदिनं विद्यालयं गच्छति स्म। सा नियमत: स्वस्य पाठस्य श्रवणं मननं च करोति स्म। परीक्षायां च सफला भवति स्म किन्तु गीता यदा कदा विद्यालयं गच्छति स्म। तत्रापि सा प्राय: कक्षायां शयनं करोति स्म। सा गृहम् आगत्य अपि क्रीडति स्म। परिणामत: सा परीक्षायां असफला अभवत्। सा सदा एतद् कथयति स्म - "मम भाग्यं मम सहायतां न करोति। मम भाग्यं फलवद् न वर्तते"। किं वस्तुत: एवमेव अस्ति? यदि गीता अपि स्वस्य पाठस्य श्रवणं मननं च अकरिष्यत् तर्हि सा अपि सफला अभविष्यत्। इदानीं विचारणीयं किं श्रेष्ठम् विद्या भाग्यं वा?

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।
एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिद्ध्यति॥

सत्यमेव उक्तं यत् केवलं भाग्येन एव सर्वं न भवति। कैश्चित् मन्यते- "उद्यमस्य न का अपि आवश्यकता"। यदि विधात्रा भाग्ये धनं भविष्यति इति लिखितं तदा अवश्यमेव मानव: धनं प्राप्नोति। यदि तेन निश्चितम् अस्ति यत् मानव: विद्यां प्राप्स्यति तदा अवश्यम् एव स: विद्यां प्राप्नोति। वस्तुत: भाग्येन सह परिश्रम: अपि मानवेन कर्तव्य:।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

विद्या सर्वत्र मित्रवद् व्यवहरति। तां न कोऽपि हर्तुं समर्थ:। अपि च—

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं तत: सुखम्॥

स्वभाग्यस्य निर्माणं मनुष्य: स्वयमेव करोति। कर्मण: विषये तुलसीदासेन उक्तम्—

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहिं सो तस फल चाखा॥

य: जन: कर्म करोति तस्य भाग्यं अपि तस्य अनुकूलं भवति। स यदिच्छति तदेव प्राप्नोति।

जीवनकाले मित्रस्य महत्त्वम्

तरूण चाण्डक

बी.ए.संस्कृत (विशेष) द्वितीय वर्ष

केनचित् कविना उक्तम् "आपदि मित्रपरीक्षा शूरपरीक्षा रणांगणे च भवति"। सत्यमेव खलु इदं वचनम्। यथा शूरस्य परीक्षा रणांगणे भवति तथा मित्रस्य परीक्षा संकटकाले भवति। यदा विपत्तयः आपतन्ति, तदा यः साहाय्यं करोति, धैर्यं ददाति स एव मित्रमस्ति। तद्यथा —

पापान्निवारयति हिताय योजयते
गूढान् निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥

यः संकटकाले सहायकः, यः सन्मार्गप्रवर्त्तकः, यः पापनिवारकः स एव सन्मित्रमिति सत्पुरुषाः वदन्ति। जीवने यथा मातृपित्रोः स्थानं महत्त्वपूर्णमस्ति तथैव मित्रस्य स्थानमपि महत्त्वपूर्णम्। मातापितरौ सन्ततिं पालयन्तः, संस्कारान् च आधानं कुरुतः किन्तु मित्रस्य समीपे तु अतीव आनन्दम् अनुभवति दुःखं च कृशीभवति। मित्रैः सह कृतं भ्रमणमपि अत्यानन्ददायकमस्ति। सुखस्य समये मित्राणां संगतिः सुखवर्धनं करोति दुःखस्य समये तु सकलसंतापं हरति तेषामेव संगतिः।

मित्रं विना जीवनं न सम्पूर्णम्। बाल्यकाले कृता मित्रता पापरहिता अपेक्षारहिता च अस्ति। यौवनकाले तु सुहृदः सर्वस्वमेव। युवकाः युवतयः च बहुकालं सुहृद्संगत्यां यापयन्ति। वृद्धावस्थायामपि मित्राणां सहवासः स्पृहणीयः अस्ति। केचन जनाः पुस्तकानि एव मित्ररूपाणि स्वीकुर्वन्ति। नूनं पुस्तकानि अस्माकं मित्राणि एव। पुस्तकपठनेन समययापनं सम्यक् रूपेण भवति। पुस्तकानि मित्रवद् मार्गदर्शकानि सन्ति। केनचिद् सुभाषितकारेण उक्तम् "अमित्रस्य कुतो सुखम्" इति। यस्य मित्रं नास्ति सः परमसुखात् वञ्चितः च भवति। यत्समीपे सन्मित्रमस्ति सः वस्तुतः धनी वर्तते।

तर्कसिद्धा सत्यवादिता

बृजेन्द्र पाण्डेय

बी.ए. संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

एकदा कस्याञ्चिद् सभायां कश्चन राजनेता निर्वाचनम् अधिकृत्य भाषणं दत्तवान्। विपक्षिदलस्य राजनेतॄन् मनसि निधाय सः उक्तवान् "राजनेतारः तु प्रकृत्या अनृतभाषिणः। अतः ते विश्वासयोग्याः न सन्ति"। तस्यां सभायां द्वौ तर्कनिपुणौ विद्वांसौ अपि आस्ताम्। तस्य राजनेतुः भाषणं श्रुत्वा तौ ततः गतवन्तौ। मार्गे गच्छन् तयोः एकः तर्कनिपुणः अपरं तर्कनिपुणमवदत् – "राजनेतॄणां सत्यवादिता अद्य राजनेत्रा सम्यक् निरूपिता"। तदा अपरः तर्कनिपुणः विद्वान् प्रत्यवदत् – "भोः, किम् एतत् ? ममापि तस्य भाषणं श्रुतम्। तेन तु उक्तं यत् राजनेतारः असत्यवादिनः। एवं तेन राजनेतॄणां स्वभावविषये एव प्रतिपादितं यत् राजनेतारः अनृतभाषिणः"। तदा प्रथमः तर्कनिपुणः अकथयत् – "ममापि सर्वं श्रुतम्। त्वया ध्यातव्यं यत् वक्ता तु राजनेता अस्ति स च असत्यभाषी। अतः तात्पर्यमिदम् अस्ति यत् तस्य वचनम् "राजनेतारः अनृतभाषिणः" इति तु असत्यमेव। अधुना सिद्धमस्ति यत् स राजनेता असत्यम् अवदत्। वस्तुतः राजनेतारः सत्यभाषिणः सन्ति।

एहि, हसाम:

कौशलपति मिश्र

बी.ए.संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

• पठितुं न जानाति शुनकः

"मम शुनकः कुत्रापि अदृश्यतां गतः"।

"एवम्! तर्हि पत्रिकायां विज्ञापनं प्रकाशयतु भवान् एतद्विषये"।

"किं तेन? मम शुनकः पठितुं न जानाति"।

• चिकित्सा

"भवान् पशुवैद्यः किम्?" – कश्चन आगत्य पृष्टवान्। तदा पशुवैद्यः उक्तवान् – "आम्। भवतः कः रोगः? वदतु। औषधं दास्यामि"।

• अन्यया लिखतु

काचित् गृहिणी आतङ्कमिश्रितेन स्वरेण वैद्यं दूरवाण्या पृष्टवती – "श्रीमन्! मम पुत्रः लेखन्याः अग्रं गीर्णवान् अस्ति। इदानीं मया किं करणीयम् ?" इति। तदा वैद्यः उक्तवान् – "चिन्तां मा करोतु। अन्यां लेखनीम् अङ्कनी वा स्वीकृत्य लिखतु" इति।

• न इदानीम्

"सुखमयं जीवनं नाम कीदृशम् इति विवाहानन्तरं ज्ञातं मया" इति उक्तवान् एकः। "तन्नाम विवाहानन्तरम् इदानीं भवान् सुखेन जीवन् अस्ति इति खलु भवतः आशयः ?" इति पृष्टवान् अपरः। तदा प्रथमः उक्तवान् – "तथा न। विवाहानन्तरं मया ज्ञातं यत् विवाहात् पूर्वतनं जीवनम् एव सुखमयम् आसीत्" इति।

• अनन्तरं द्रक्ष्यामि

वैद्यः रोगिणः परीक्षां कुर्वन् उक्तवान् – "भवतः एतस्य रोगस्य कारणं किम् इत्येव न ज्ञायते। मद्यपानस्य परिणामतः स्यादेतत्" इति। तदा रोगी उक्तवान् – "एवं वा? तर्हि भवतः मद्यपानजातः मदः यदा अपगमिष्यति तदा पुनः भवन्तं द्रक्ष्यामि" इति।

कष्टं निर्धनजीवनम्

प्रीति कुमारी
बी.ए.संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

सङ्गं नैव हि कश्चिदस्य कुरुते संभाषते नादरात्
संप्राप्तो गृहमुत्सवेषु धनिनां सावज्ञामालोक्यते।
दूरादेव महाजनस्य विहरत्यल्पच्छदो लज्जया
मन्ये निर्धनता प्रकाममपरं षष्ठं महापातकम् ॥१॥

नित्यं कोलाहलोऽपरितोषः कलह आक्रोशः
चिन्ताऽशान्तिर्युगपद् आक्रामन्ति दरिद्रम्।
अम्बा तुष्यति न मया न स्नुषया साऽपि नाऽम्बया न मया
अहमपि न तया न तया वद राजन् कस्य दोषोऽयम्? ॥२॥

दारिद्र्याद् ह्रियमेति ह्रीपरिगतः प्रभ्रंश्यते तेजसो
निस्तेजाः परिभूयते परिभवान्निर्वेदमापद्यते।
निर्विण्णः शुचमेति शोकपिहितो बुद्ध्या परित्यज्यते
निर्बुद्धिः क्षयमेत्यहो निर्धनता सर्वापदामास्पदम् ॥३॥

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः
यस्यार्थाः स पुमांल्लोके यस्यार्थाः स च पण्डितः ॥४॥

शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च

प्रिया
एम.ए.संस्कत (पूर्वार्ध)

किम् अस्ति तत् पदम्
यः लभते इह सम्मानम्।
किम् अस्ति तत् पदम्
यः करोति देशानां निर्माणम् ॥१॥

किम् अस्ति तत् पदम्
यं कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्।
किम् अस्ति तत् पदम्
यस्य छायायाः प्राप्तं ज्ञानम् ॥२॥

किम् अस्ति तत् पदम्
यः रचयति चरितं जनानाम्।
'गुरुः' अस्ति अस्य पदस्य नाम
सर्वेषां गुरूणां मम शतं शतं प्रणामाः ॥३॥

एहि एहि वीर रे समर्पितम्

वैशाली कश्यप
बी.ए.संस्कृत (विशेष) द्वितीय वर्ष

एहि एहि वीर रे वीरतां विधेहि रे।
पदं ह्रदं निधेहि रे भारतस्य रक्षणाय जीवनं प्रदेहि रे ॥

त्वं हि मार्गदर्शकः त्वं हि देशरक्षकः।
त्वं हि शत्रुनाशकः कालनागः तक्षकः ॥

साहसी सदा भवेः वीरतां यदा भजेः।
भारतीय-संस्कृतिं मानसे सदा धरेः ॥

पदं पदं मिलच्चलेत् सोत्साहं मनो भवेत्।
भारतस्य गौरवाय सर्वदा जयो भवेत् ॥

नारीशिक्षायाः महत्त्वम्

नेहा कुमारी

बी.ए.संस्कृत (विशेष) प्रथम वर्ष

राष्ट्रस्य निर्माणे शिक्षा महत्त्वपूर्णा भवति । नारी एव परिवारस्य समाजस्य देशस्य च समृद्धेः कारणं भवति । अस्माकं समाजः पुरुषप्रधानः अस्ति परन्तु समाजस्य निर्माणे न केवलं पुरुषाणाम् अपितु नारीणामपि योगदानम् अस्ति । तस्य कृते समाजे पुरुषाणां स्त्रीणां च कृते शिक्षा महत्त्वपूर्णास्ति । प्राचीनकाले तु स्त्रीणां शिक्षा अनिवार्या बभूव । वैदिककाले नार्यः शिक्षिताः बभूवुः । अपाला-घोषा -आदयः विदुष्यः वेदे नामतः निर्दिष्टाः याः वैदिकमन्त्राणामपि रचनां चक्रुः । यदि माता सुशिक्षिता भविष्यति तर्हि स्वशिशून् पालनं शिक्षणं च कर्तुं शक्नोति । शिक्षां प्राप्यैव सावित्रीबाईफूले-रमाबाई-मदरटैरेस-आद्याः नार्यः समाजसेवामकुर्वन् । पी.टी.उषा-किरणबेदी-पी.वी.सिंधू-इत्यादयः नार्यः अपि विविधक्षेत्रेषु अद्वितीयानि कार्याणि अकुर्वन् । अपि च कल्पनाचावला इति नाम भारतीया नारी अंतरिक्षं गत्वा देशं गौरवान्वितम् अकरोत् । श्रेष्ठसमाजस्य सभ्यसमाजस्य समृद्धसमाजस्य च रचनायां स्त्रीणां योगदानं महत्त्वपूर्णमस्ति ।

यदि नारी अशिक्षिता भवेत् तर्हि सा स्वशिशूनां पालनं तेषां शिक्षायाः च व्यवस्थां कर्तुं समर्था न भविष्यति । सा आदर्श-गृहिणी, आदर्श-पत्नी, आदर्श-माता वा न भविष्यति । कथितं च यदि एकस्मिन् परिवारे एका नारी शिक्षिता भवेत् तर्हि परिवारे स्थिता सर्वे जनाः उन्नतिं विकासं च प्राप्स्यन्ति । यदि परिवारः उन्नतिं प्राप्नोति तदा समाजस्य देशस्य च विकासः अवश्यमेव भवति । आधुनिककाले तु शिक्षाक्षेत्रे प्रशासनिकक्षेत्रे क्रीडाक्षेत्रे पत्रकारिताक्षेत्रे चलचित्रक्षेत्रे सुरक्षाक्षेत्रे राजनीतिकक्षेत्रे सामाजिकक्षेत्रे च सर्वत्र नार्यः कार्यरताः सन्ति । सम्यक् उक्तम् —

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते ।
रमन्ते तत्र देवताः ॥

वसन्तपञ्चमी

आदित्य सिंह

बी.ए.संस्कृत (विशेष) द्वितीय वर्ष

माघमासस्य शुक्लपक्षस्य पञ्चम्यां तिथौ ऋतुराजवसन्तस्य आगमनसूचना भवति । वसन्तपञ्चमी श्रीपञ्चमी इति नाम्ना अपि ज्ञायते । अस्मिन् समये प्रकृतेः सौन्दर्यं चरमोत्कर्षं भवति सर्वत्र च रमणीयं दर्शनं भवति । वृक्षेषु नूतनाः किसलयरागाः राजन्ते । आम्रेषु मञ्जर्यः परितः भ्रमन्तः भ्रमराः दृश्यन्ते । कोकिलानां मधुरस्वराः चित्तमाकर्षन्ति । वसन्तोत्सवे शीतकालस्य अनन्तरं परम्परया सौन्दर्यस्य पूजनं क्रियते । प्रकृत्या विविधैः पुष्पैः नवान्नैः फलैः च ऋतुराजवसन्तस्य स्वागतं क्रियते । एतस्मिन् काले सौन्दर्यस्य रमणीयतायाः पुष्पाणां किसलयानां मधुरागमनस्य च उत्सवः भवति ।

महो, अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना, धियो विश्व विराजति ।

अस्मिन् दिवसे जनाः सरस्वत्याः पूजनं कुर्वन्ति । ज्ञानस्य देवी सरस्वती अस्ति । जनाः तस्याः प्रतिमायाः विधिना प्राण-प्रतिष्ठां कुर्वन्ति । प्रायः जनाः एतस्मिन् दिने पीतवर्णानि वस्त्राणि धारयन्ति । अस्मिन् दिवसे सर्वत्र सांस्कृतिककार्यक्रमाः अपि आयोज्यन्ते । सरस्वतीपूजा वसन्तपञ्चमी इति अपि ज्ञायते । सर्वे जनाः विशेषरूपेण बालकाः बालिकाः च इममुत्सवं सोल्लासेन समायोजयन्ति ।

"श्री सरस्वती शुक्लवर्णा सस्मिता सुमनोहरा" ।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

प्रिया द्विवेदी

बी.ए.संस्कृत (विशेष) तृतीय वर्ष

पुरुषार्थचतुष्टयस्य प्राप्तिः एव मानवजीवनस्य लक्ष्यम् । धर्मार्थकाममोक्षणां कृते शरीरस्य आरोग्यं मूलम् उत्तमम् । रुग्णः मानवः किमपि कार्यं कर्तुमसमर्थो भवति । स्वस्थो मानव एव कर्माणि सम्पादयितुं समर्थः । शिवप्राप्त्यर्थं मृणालिकापेलवं स्वाङ्गं कठोरतपसा अहर्निशं ग्लापयन्तीं पार्वतीं ब्रह्मचारीवेशे स्थितः शिवः कथयति-

अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशम्
जलान्यपि स्नानविधिं क्षमाणि ते।
अपि स्वशक्तया तपसि प्रवर्तसे
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्॥

यदि मानवस्य शरीरं स्वस्थं नास्ति तथा महती आकांक्षा सत्यपि स किमपि सुकार्यं न कर्तुं शक्नोति । शरीराद् ऋते परोपकारत्यागदानादिधर्मकार्याणि अपि न सम्भवं दुःखार्तानां सेवायाः तु का कथा । स्वस्थशरीराय युक्ताहारविहारस्य अतीव आवश्यकता भवति। गीतायामपि उक्तम् –

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

इन्द्रियाणां संयमं विना शरीररक्षणं न सम्भवम् । सद्वृत्तेन हि मानवः जितेन्द्रियः भवति । किं बहुना आरोग्यमेव स्वास्थ्यमस्ति स्वास्थ्यमेव च सर्वोत्तमं सुखम्।

स्वस्थः निर्धनोऽपि परिश्रमेण सुखिजीवनं जीवितुं धर्मं च चरितुं समर्थः परं रुग्णः धनवान् अपि दुःखी दरीदृश्यते । धनेन सः स्वस्वास्थ्यं क्रेतुं समर्थो न भवति। अतः उचितमेव कथितम् – "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" ।

सत्संगतिः

सुभाष झा

बी.ए.संस्कृत (विशेष) प्रथम वर्ष

सतां संगतिः सत्संगतिः कथ्यते। सत्संगत्या मनुष्याः उन्नतिं लभन्ते सज्जनाः च भवन्ति। महात्मनः बुद्धस्य संगत्या अंगुलिमालः सज्जनोऽभवत्। सत्संगत्या अनेके दुर्जनाः अपि दुर्व्यसनं त्यजन्ति। बाल्यकालादेव मनुष्यः सत्संगतिं प्राप्नुयात्। विदुषां संगत्या मनुष्यः विद्वान् भवति। धृष्टानां संगत्या धृष्टः भवति। चौरस्य संगत्या चौर एव भवति। विदुषां संगत्या बुद्धिः निर्मला तीव्रा च भवति। योग्यछात्राणां संगत्या छात्रः योग्यः अनुशासनप्रियः च भवति। दुष्टैः सह मनुष्यस्य बुद्धिः मलिना भवति।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥

सत्संगतिः तु सर्वदा पुरुषाणां हितं करोति। अतः सत्संगतिः करणीया।

वैदिकवाङ्मये पाश्चात्यविदुषां योगदानम्

विवेक कुमार

बी .ए. (विशेष) संस्कृत द्वितीय वर्ष

१८शताबदीतमे उत्तरार्द्धे पाश्चात्यवेदज्ञानां कार्याणि अपि वेदानाम् अनुशीलने सर्वेषां ध्यानम् आकर्षितवन्ति। १७८४ख्रीष्टाब्दे सर विलियम जॉन्स नाम्ना आंगलविदुषा स्वप्रयासेन कोलकाता नगरयां बंगाल एशियाटिक सोसाइटी इति नाम शोधसंस्था स्थापिता। पूर्वे हि सः कोलकाता उच्चन्यायालयस्य प्रधानः न्यायाधीशः आसीत्। अस्माद् कालाद् एव आंग्लविदुषां संस्कृतभाषां प्रति रुचिः अभवत्। १८०७ख्रीष्टाब्दे कोलब्रुक इति नाम पाश्चात्यविद्वान् एशियाटिक रिस्चेंज इत्यस्मिन् नाम्नि पत्रिकायां वेदानां विषये विस्तृतं निबंधं लिखितवान्। अस्मिन् निबंधे वेदविषयकनानाग्रंथानां विवरणं तेषां च महत्त्वमपि दर्शितवान्। अपि च आंग्लविद्वांसः प्राचीनग्रन्थानां वेदानां च परिशीलनम् अनुवादं अपि कृतवन्तः।

१८४६ ख्रीष्टाब्दे: रूडोल्फ रात नाम जर्मन विद्वान् 'वेदस्य साहित्यमेतिहासं च' इति नाम एकं महत्त्वपूर्णं पुस्तकं प्रकाशितवान्। येन पुस्तकेन यूरोपदेशे वेदानुशीलनं प्रति अतीव गंभीरा प्रवृत्तिः समुत्पन्नः। इतोऽपि राथ महोदयः "सेंटपीटर्सबर्गसंस्कृत- जर्मन" इति महाकोशस्य अपि निर्माणं कृतवान्। अस्मिन् ग्रन्थे प्रत्येकं शब्दस्य अर्थः विकासक्रमेण वर्णितोऽस्ति। वैदिकशब्दानाम् अर्थसंकलनं राथ महोदयेन स्वयमेव कृतमस्ति। लौकिकसंस्कृतशब्दानाम् अर्थनिर्णयस्य कृते वोठलिंग नाम जर्मनविद्वान् शब्दकोशं निर्मितवान्। अयं शब्दकोशः संस्कृत-शब्दानाम् ऐतिहासिकम् अर्थं ज्ञातुम् उपयोगी वर्तते।

मैक्समूलरमहोदयेन ऋग्वेदसायणभाष्यस्य प्रकाशनं कृतम्। अस्य ग्रन्थस्य प्रकाशनेन पाश्चात्यदेशेषु वेदविषये अध्ययन-अध्यापनेषु रुचिः सुदृढा अभवत्। प्रो० एम. हाग महोदयेन कृतम् ऐतरेयब्राह्मणस्य शुद्ध-संस्करणं तस्य च आंग्लानुवादम् अद्यापि अतीव उपादेयमस्ति। डॉ० आईसेक्ट-महोदयस्य रोमनाक्षरेषु प्रकाशितः ब्राह्मणग्रन्थस्य संस्करणं विशुद्धम् अस्ति इति विद्वद्भिः कथ्यते। १८७५ख्रीष्टाब्दे डॉ० वेबर-महोदयस्य माध्यन्दिनशतपथब्राह्मणस्य प्रथमं संस्करणं प्रकाशितम्। डॉ ए०सी० बर्नेल महोदयः अपि लन्दननगरे १८७८ख्रीष्टाब्दे विविधसामवेदीयब्राह्मणग्रन्थानां संपादनं कृतवान्। डॉ० एच० ओर्टल महोदयेन जैमिनीयब्राह्मणस्य आंग्लभाषायाम् अनुवादः कृतः। एवं पाश्चात्यविद्वांसः वैदिकसाहित्यस्य अनुवादक्षेत्रे प्रकाशनक्षेत्रे च प्रयासं कृतवन्तः।

मूर्खः वानरः

जसवन्त

बी.ए.संस्कृत (विशेष) द्वितीय वर्ष

पुरा एकः नृपः आसीत्। तस्य मित्रम् एकः वानरः आसीत्। सः वानरः राज्ञः प्रियः आसीत्। सः सदैव राज्ञा सह तिष्ठति, गच्छति, खादति, शेते च। रात्रौ एकदा यदा नृपः सुप्तः आसीत् तत्रैव च वानरः राजानं वीजयति स्म। तदा एका मक्षिका नृपस्य नासिकायां वारं वारं तिष्ठति स्म। यद्यपि वानरः तां वारं वारं न्यवारयत्, तथापि सा पुनः पुनः राज्ञः नासिकायाम् एव सीदति स्म। तां मक्षिकाम् अपवारयितुं सः वानरः यदा अतीव व्यग्रः अभवत् सः खड्गं प्राप्य तां प्रति प्राहरत्। यावत् सः वानरः खड्गं अचालयत् तावत् मक्षिका तु उत्पत्य दूरं गतवती परं खड्गेन नृपस्य नासिका छिन्ना अभवत्। तदनन्तरं यदभवत् तत्तु सर्वे अवगन्तुम् अर्हन्ति।

अतएव उच्यते – "मूर्खैः सह मित्रता कदापि न कर्तव्या"।

ENGLISH

-Sharbani Garg

-Aditi Gupta

Editorial Board

-Dr. Nivedita Sen

-Ms. Ruchi Sharma

Student Editors

-Shreyasi Banerjee

-Yashodhara Sengupta

-Ananya Gaur

-Nilesh Goswami

INDEX

1. A Taste of Delhi
2. Morality: The Dilemma Since Ages
3. Schrodinger's Cat Experiment
4. But, You Didn't Put It on Social Media!
5. We Grow, The Economy Grows
6. Just Believe in Yourself
7. The Societal Costs of Gender Stereotypes
8. For the Pursuit of Excellence
9. Variety is the Spice of Life
10. String Theory
11. School
12. Hope Stands in Front of Me
13. The Mind
14. The End
15. Anxiety
16. Memories
17. Racism
18. Sun brings out the best in me
19. Kindness
20. Who Am I ?
21. Vacillating
22. To 2021, A Ray of Hope
23. Here to Bloom
24. Life Goes On
25. The Humankind
26. The Final Moments
27. Save and Be Brave!
28. God & Equality

A Taste of Delhi

Shaurya Sinha

B.A. (Hons.) Zoology, First Year

It's winter in Delhi, which means that this dusty megapolis in the arid tail-end of the Aravallis, usually just a dust storm away from the sandy wastes of the Thar desert, is at its best. There's a nip in the air, the afternoon sun is pleasant and balmy, the innumerable parks and carefully tended traffic roundabouts ablaze with greenery and color.

Perfect weather, in fact, for sampling Delhi's most famous attraction outside the Qutub Minar and the Red Fort — it's incredible street food. Winter is the ideal time of the year to gorge oneself on the famous piping hot tikkis, kachoris, and samosas, as well as the seasonal specials like gajar (carrot) halwa or the ever-favorite, hot jalebis.

For those feeling guilty about those deliciously unhealthy calories all of that sinful eating entails, they can always put it down to their quest for 'knowledge'!

Wandering through the narrow streets of the Indian capital, you are bound to develop a hearty appetite. The city thrives and eats on its streets, offering an overwhelming variety of street food to the people. The whiff of steaming samosas still hissing in the hot oil, or the sweet aroma of crisp jalebis can arouse everyone's senses. Temptation is everywhere and it is hard to resist. The cuisine here incorporates the best of Hindu-Rajput, Turkish, Afghani, Persian, and Mughal influences. History is served sumptuously, garnished with culinary secrets that have been passed down through generations.

This incredible variety of culinary delights in the capital have also now seen additions being made by dishes from other cultures, with Delhi providing its versions of masala dosas, Tibetan dumplings, and Chinese noodles.

Curiously, many food courts in shopping malls have attempted to bring together the highlights of Delhi's street food, ranging from kebab to kachori. To get the real thing, however, one needs to travel the city, and Delhi's sprawling rail network is there to aid everyone along the way. No visitor can claim to have mapped Delhi without having made the rounds of its street food joints, and without promptly returning to eat some more.

Morality: The Dilemma Since Ages

Khushi Sharma

B.A. (Hons.) Philosophy, First Year

INTRODUCTION

Be it self-directed or swayed by social constructs, moral behavior or individual conscience knits together the basic thread of human personality. Since the beginning of human civilization, conscience has existed as a common characteristic of every human being. Centuries back, even when India was not organised as a nation-state and when there was no constitution to define the boundaries of ethics, morality existed as a living reality. Though it had been a known and integral element of human civilization for centuries, its consistency had always been put under a question mark. It is amusing to think that while ethical frameworks have changed their complexion through time, there has not been a standard set of moral concepts that may put them within constant boundaries. Different groups of people with similar cultures, traditions, and languages came together to form nations; but in India, it is not similarity but diversity which unites different communities under the spirit of nationhood. In a country, where diversity has been the basis of unification, moral grounds have also fluctuated concerning varied perceptions. There are variations based on caste, religion, sex, community, and age. The ideas of right and wrong keep on changing their shapes. Even in a single day, thousands of uncertainties clash in our minds about what is moral and what is not. Not only with circumstances but also with people, morality varies vastly. If we don't have stable standards of morality, then why has it been perceived as a significant part of human civilization for centuries?

Traditionally, ethics have largely been extracted out of religious texts, ones that were preached years back and were often claimed by a religious leader. The question that then arises - can something which has not been amended with the passage of time be acceptable for the forthcoming generations? Is it legitimate to consider a religious text written centuries back a source of moral concepts? People are divided on these matters, but if we dig up deeper, we may observe that different groups have organised themselves into different kinds of moral sects. They are dogmatic of their preachings and lack mutual understanding between each other. Variations in moral sects and the rudimentary approach of the preachers had been a reason behind violence and communal instability.

IN QUEST OF A DEFINED STRUCTURE OF MORALITY

For decades, there has been a need for a defined structure of morality that may overrule the

other multiple fragments of morality. However, no religious texts, no individual preachings can be taken as a constant set of morality by a larger population. Ranging from Hinduism to Buddhism, Jainism, and Sikhism, India has gone under transitions that have shaped the country's soul. Different communities of people have been living with their respective philosophies of morality. Colonization and globalization, both have influenced the moral development of the country as a whole.

India has an ancient history of ethics and morality. In texts, and even in an oral culture, moral understanding has been the priority for Indians. Vedas, Puranas, Upanishads, and other smritis have been a source of ethical concepts. The central concepts of Indian ethics are represented in Ṛgveda, one of the oldest knowledge texts not only for India but for the entire world. In Ṛgveda, we come across the idea of an all-pervading cosmic order (ṛta) which stands for harmony and balance in nature and human society. In human society, when this harmony and balance are disturbed, there is disorder and suffering. This is the power or force that lies behind nature and keeps everything in balance. In Indian tradition, the concept of ṛta gave rise to the idea of dharma. The term dharma has been often perceived as religion; it stands for duty, obligation, and righteousness. It is a way of life in which ethical values are considered supreme and everyone is expected to perform their duty according to their social position and station in life. All the four Veda: Sama, Yajur, Artha, Riga were under Shruti (that was perceived by sages by self-realization), intellectuals constructed Smriti (memory) out of the analysis of these Vedas. Upanishads are the texts that consist of concepts of all four Vedas and come under Smriti. These texts of Smriti have also provided an insight into moral concepts.

With an upsurge in faulty interpretations of these texts and a reinforcement of the caste system, other movements also came up with their ethical approaches. Jainism is another important religion of the land. It places great emphasis on the three most important things in life, called three gems (Triratna). These are right vision (Samyaka dṛṣṭī), right knowledge (Samyaka jñāna) and right conduct (Samyaka cāritra). Apart from these, Jain thinkers emphasize the need for reverence (śraddhā). Other moral principles also govern the life of Jains. Most important of these are ideas of merit (puṇya) and demerit (pāpa). After the Jain, there are the Buddhist ethics. It is called an ethical religion as it does not discuss or depend on the existence of God but instead believes in alleviating the suffering of humanity. The ethical values in this faith are based on the life and teachings of the Buddha. These moral instructions are included in Buddhist scriptures or handed down through tradition. According

to Buddhism, the foundation of ethics is the pañcaśīla (five rules), which advocates refraining from killing, stealing, lying, sexual misconduct, and intoxicants. In becoming a Buddhist, a layperson is encouraged to take a vow to abstain from these negative actions. Proceeding further in the timeline, Sikhism is the recent faith in Indian tradition. Guru Nanak, the founder, stated that "Truth is higher than everything else, higher still is truthful conduct."

With the start of colonization of the land and the emergence of the Indian state, moral standards and ethical grounds have also gone through a revaluation. After Independence, India came up with a comprehensive charter of rights and duties- the Constitution- that defined the development models and spelt out the rights and duties of the citizens of the country. Our constitution is the text that is ideally prioritized above any other moral sect. Despite this, the fact that there are contradictions and disagreements concerning constitutional morality cannot be neglected. But, the other way of looking at it is that the scope of amendments has made constitutional morality justified and sustainable.

CONCLUSION

Even though we have a constitution, various circumstances arise where a single approach cannot be considered moral. What is moral for one, maybe it is immoral for the other. The Constitution cannot extend itself to every sphere. The laws written in the constitution are not evenly enforced because of the different notions which people carry. Taking into consideration the Section 377 judgment, even after the judgment, certain communities consider intersexual and marital relations between people of the same sex as immoral. Many extract morality out of the centuries-old religious texts, and in the process, overlook their rationality.

Mob lynching has become the new norm. The perpetrators think that what they do is inherently moral- this reflects that present standards of individual morality lack a sense of humanity. People are living with their own sense of morality, their individual beliefs shaped out of their individual experiences, community, religion, and caste. In many situations, various contradictory moral standards have been observed among the same set of people. In concerning oneself with a limited set of moral ideals, the essence of humanity and the value of human life is left behind. It is not always about being moral or immoral, but about the need for being sensible towards one's duties as a human being. Fixing and rehabilitating morality within ethical boundaries is not adequate; we need to realize the essence of humanity to make a difference. Moral concepts need to change and be updated with time.

The concepts of the morality of the older generation may seem archaic to the youth. Moral dilemmas are not just topics of discussion for intellectuals but a vital issue for social well-being. Individually, when we dwell upon the uncertain grounds of what is moral and what is not, we must observe that any act which may harm society or any individual should be considered immoral. Being human, it is our responsibility to be ethical seekers who leave a developed sense of morality and a nourished conscience for posterity.

Schrodinger's Cat Experiment

Abhishek Baranwal,

B.Sc. (Hons.) Electronics

Rules of quantum physics always shake our knowledge of classical physics. For instance, it says that a particle behaves differently when it is under observation than when it is not being observed.

Actually, when a particle is not being observed it exists in the state of superposition i.e. various possible states coinciding, but when it is observed, we see just one of these possible states.

This statement is supported by a thought experiment performed by Sir Ervin Schrodinger and is called Schrodinger's cat experiment. It involves the use of a cat, a flask of poison, and a radioactive source in a box.

In this experiment, a cat is put in a box with such arrangement that creates a 50% probability of the cat dying and a 50% probability of the cat escaping, that is, an equal chance of the cat dying or surviving.

Now, obviously, on observation, we would see the cat to be either dead or alive but not both, but according to Copenhagen's interpretation of quantum mechanics, this happens only when we observe the cat. During observation, the cat is both dead and alive while it appears to be either dead or alive to us. This is because the cat is in a state of superposition, meaning it is both dead and alive simultaneously.

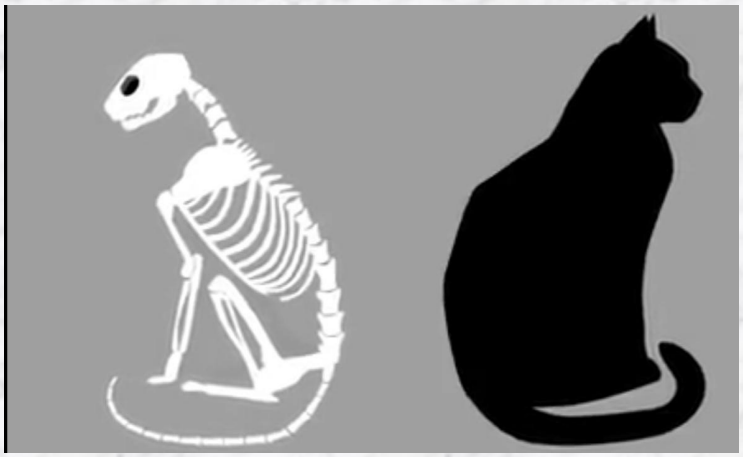

So, this unusual behavior, where upon observation the cat would be either dead or alive, that is, equal chances of both can be explained by 'Multi Worlds Theory' which states that, "anything that can happen does happen".

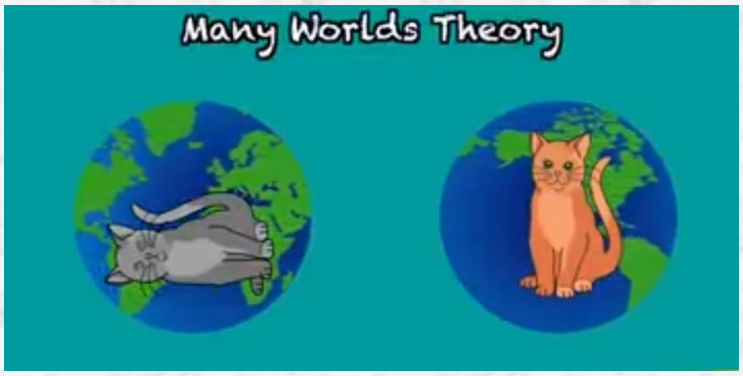

As we observe the cat, at that moment splitting of the universe occurs. In one universe the cat is found to be alive while in the split universe, it is found to be dead.

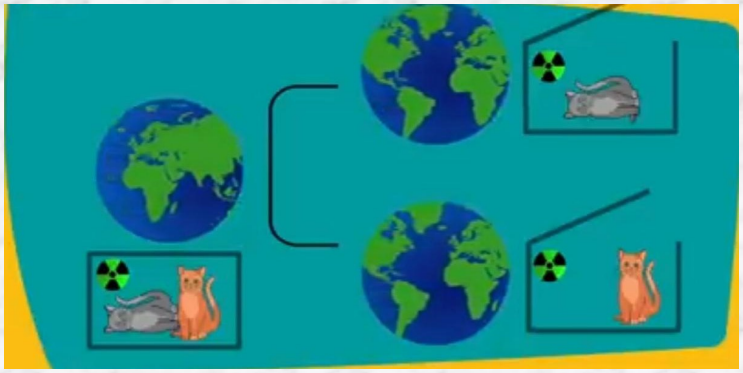

SPLITTING OF UNIVERSE

But, You Didn't Put It on Social Media!

Aayushi

B.Sc. (Hons.) Life Sciences, Second Year

There's always that one thing that one recoils from instantly. The relationship between you and that thing is as good as the north poles of two magnets! For me, in recent times that thing is social media.

Now, before you decide to get on with the: "Hey!!! Social media is not that bad a 'place'. It's a platform for talent to grow, a space offering a wider range of choices to the audience, and is an employment opportunity in itself." I just want to say, yes! I am well-versed with the pros of social media. But what we forget is that tools like Instagram, Facebook, YouTube are just apps on our mobile phones, but not a true portrayal of who we are.

Whenever we put a status about ourselves, about our relationships with people, our hobbies, or our daily activities - mundane to some, an advantage to others - we put ourselves in a very vulnerable space for people to judge. Albeit the intent could be just to share a part of our life with people around us, but more often than not we unconsciously might be seeking validation as human beings through whatever we put up for display on these platforms.

As we share these bits and portions of our lives, we think that we are just seeking others' opinions or maybe criticism- which is fine- as long as we are at peace with the fact that it is

an opinion, and a subjective one at that. The psychology at play on social media is that if you take to your heart a good comment like, "You're mind-blowing!!!"; then a hate comment like "You're ugly" is bound to get to you too, which you could have otherwise just let be in your comment box. The complication is that Likes and Comments in reel life aren't always genuine, and the same is to be said for real-world conversations too.

Another problem builds up when you start looking for validation in the numbers of likes on your posts. Tension starts to build up if someone's birthday passes by but the wishes aren't posted on Instagram stories or Whatsapp statuses. It seems apparent that rather than a video call or a sweet message in the DMs, stories are of the essence, to be seen by others. One shouldn't even get started on grieving for a departed soul. There is no question about a person's right to grieve in silence, their words of condolence and tears of emotions kept to themselves as being sincere is the only thing that matters in such matters. However, #RIP to the mental health of people who are alive if a message like, "So sorry to hear about this" is nowhere to be seen by a mutual from their account.

Wanting the tag of a social butterfly is commanding our life so much, that we respond to a piece of emotional or heartbreaking news impulsively, without even imparting it a thought or feeling in its true sense, an unjust attitude, if one must put it plainly.

The heartbreaks that the pandemic brought along with it have been endless, but in a time where social media rules our lives, it is on us to be the wise, empathetic and more aware users, not just ones promoting content we hold no idea or opinion about!

PS: The irony of the situation is that this article which looks like it is criticizing social media will also reach out to you through some social media platform. This is how popular social media is. It's is not a criticism, but a wake-up call for us to realize that we need to as users build a more positive environment on social media because it has become a very important and big part of our lives!

We Grow, The Economy Grows

Honey Sharma

B.Sc. (Hons.) Mathematics, Second Year

Every mind of our nation mature enough to read the A to Z is aware of the enormous population that India cherishes, just .02 billion short of China at the present. The gargantuan population of China stands well justified seeing as China maps itself as the largest country in the world. The same can't be said about India, the seventh-largest country in the world in terms of geography but one which still managed to bag the 2nd rank in terms of population. It is estimated that by 2030, India may be the most populous country in the world.

Now while I sincerely acknowledge the readers' concerns about the effects of such large a population on the economy, society, and distribution-cum-scarcity of sources per individual, allow me to engage your fresh and educated minds into thinking about the pros of this large number. While of course, you must be wondering, "of what benefit could the overbearing population be to the nation?", here is how it goes: on the verge of exhausting so many resources, human resource is at the present, the most significant resource in the world. Why? Because it has the power to turn even waste into useful matter. and we have no shortage of it. What we just need is to give this population the right skills, better education and let it hone its talents. Sounds simple, right?

Once, in a programme, a student asked the missile man of India, Dr. A P J Abdul Kalam, about the strengths and weaknesses of India. The great man replied - "The strength of India is you, the millions of youth of India. And there is no weakness of India."

India has always been a unique and achievement-oriented country, and its achievements can't be described in a few words. 36% of the doctors at NASA are Indians, 12% scientists, and 38% doctors in the whole of the US are Indians too. There are these and much more tales to tell when it comes to what all of India stands for and has achieved through the years after independence.

Human resources are like natural resources; they're often buried deep. You have to go looking for them, they're not just lying around on the surface. You have to create the circumstances where they show themselves. - Ken Robinson

Yes, our nation, 'Incredible India' can attain popularity in the world for its skilled citizens, despite its population being looked upon negatively today. What we need is a change of the air that this population breathes to see the nation changing and growing simultaneously.

Just Believe in Yourself

Honey Sharma

B.Sc. (Hons.) Mathematics, Second Year

Hello readers,

You may be wondering about the significance of "belief" upon reading the title. You might also wonder if "belief " isn't just an abstract thing. It is, yes, but also of such importance that it demands a separate article for it. Its value is even more than one can think of.

"Belief system" - does it work?

Continue to read as I answer, "Absolutely yes!" There is no doubt that one becomes what they believe themselves to be, as we gradually acquire the characteristics of what we believe ourselves to be. You can easily achieve your goal, but the very first thing you need to accomplish is setting your aim, which is a "self-belief". You must have faith in yourself that you can do it, that you can achieve it.

Have you ever heard about Arunima Sinha's success story? Being the world's first amputee to scale Mount Everest, the highest peak of the world, one wonders how she achieved this feat, even after losing her leg? It was all because she believed in herself and was determined that she would do it anyway. She believed strongly in her potential and finally, she did it. Countless examples around us have proved that we can achieve whatever we believe in.

I urge you to look up the stories of successful people who have achieved what otherwise looks impossible. A famous example is observed in Manjhi: The Mountain Man, a man who disproved the saying that one cannot break a mountain. He achieved what no one else could.

Dr. APJ Abdul Kalam, the Missile Man of India, son of a fisherman, always believed that one should always dream big and should have the heart to work hard for it. He proved it by becoming the president of India and was also conferred with the Bharat Ratna Award, the highest civilian award of our country. What motivated him? It was his faith in himself, his self-belief.

There are many examples of people who will inspire you with their achievements in their life, just because they had a deep faith in themselves and believed that they could do it. And eventually, they did. This is the mantra of life. The saying goes true, "A man becomes what he believes."

You just need to be determined towards your aim with the belief in mind that you are going to accomplish your aim one day, no matter how hard the situations hit you, no matter how tough the journey towards your goal is, no matter how hard you need to work for it.

Always remember the line, "If I believe that I can, then definitely I will."

In the inspiring words of the Father of the Nation, Mahatma Gandhi: "If I have the belief that I can do it, I shall surely acquire the capacity to do it even if I may not have it at the beginning."

Just believe in yourself. Never let yourself feel down. Always keep yourself motivated. Have the positive belief that you can, and you really will. Believe that you can really achieve something, and believe me, you will be able to achieve it.

The Societal Costs of Gender Stereotypes

Apurva Tripathi

B.A. (Hons.) English, First Year

What does the phrase 'gender stereotype' mean? Gender stereotypes are the assumptions held about how people should act, based on the group/ gender to which they belong. Generally, stereotyping is formed based on some semblance of the truth. However, over the decades gender stereotyping has become a major barrier to self-expression and one of the leading causes of discrimination and abuse. It severely limits the capacity of women and men, especially during their developing years reducing aspirations and hindering personal development.

Gender-stereotypical behavior is not a sudden occurrence, instead, these attitudes and behaviors are cultivated by society from a very young age. By the age of 2.5 - 3 years, children show evidence of having some rudimentary knowledge of the activities and objects associated with each sex. Even more than adults, children will rely on a person's sex to make judgments and they are less likely to consider other relevant information about the person than adults are. With the increasing age, children tend to possess less stereotypical ideas about a person based on their sex as they deal with the social norms of the world.

Some factors play a role in socializing these gender stereotypical ideologies. It also includes family as one of the most important agents or factors from where most of the ideas about social roles of particular gender or sex are developed. The development and possession of gender stereotyping are not automatic or instant, rather facilitated by various socio-cultural and relational factors. Often, the role of women is stereotyped due to the male-dominated or patriarchal society. Sometimes, women belonging to conservative backgrounds hold up the gender stratification, therefore it becomes even more difficult to eradicate this stereotyping from society.

Were these stereotypes ever relevant to society? Are they still relevant? The answer to these kinds of questions lies inside the person's mind. Everybody has their perspectives and based on those perspectives, this society and its norms are formulated. According to the growth and development in the world, these stereotypical thoughts are no more relevant. Gender stereotyping was never relevant. Due to the patriarchal society, these thoughts were continuously fed to people which resulted in the continuity of stereotyping gender all over the world, and it still prevails in society.

For the solution, start at the grass-root level and gradually move upwards. As this is already known that these ideas are inculcated at a very young age, the solution is to change the atmosphere and surroundings in which children grow so that there is an open-mindedness in their thoughts, instead of gender-related stereotypical thoughts emerging in their minds.
This will help them grow up to be rational and practical. Ultimately it will pass onto their next generation and so on.

For the Pursuit of Excellence

Ajay Gupta

B.A. (Hons.) History, First Year

We are hardly aware of a home-grown scientist based in Calcutta who had a consequential impact on Hawking's research and work. In 1915, Einstein startled the world through his proposed theory, general theory of relativity (GTR) Which transformed our understanding of the nature of space, time, and classical physics from a new perspective. It is a geometrical theory of gravitation that generalizes Sir Isaac Newton's 'Law of Universal Gravitation and Special Relativity', providing a unified explanation of gravitation as a geometric property of space and time.

The theory is believed to be the most successful gravitational theory which is university accepted and well adduced by observations. The first success of (GTR) was in delineating the anomalous perihelion precession of mercury. Since then the theory has been used to define all manners of physical phenomena, including bending light, black holes, and the expanding universe. A supernova remnant is a diffused, expanding nebula resulting from a spectacular explosion of a star in which it ejects most of its mass in a violently expanding cloud of debris. If the remnant is massive, higher than few solar masses. Then the remnant itself squeezes inwards by gravity, forming a singularity or black hole (one way of black hole formation).

In this regard, there is a relationship between the theoretical investigations of Stephen Hawking and Amal Kumar Raychaudhuri from Calcutta popularly known as (AKR). He was remarkable but lesser known as a physicist. Educated at the Presidency College and the University of Calcutta, he subsequently joined the Indian Association for the Cultivation of Science [IACS] as a research associate and then Ashutosh College, Calcutta, as a faculty member in 1950. In 1961, fortuitously he received an offer of a professorship at the Presidency College, the seat of academic excellence. While his work would change the dynamics of general relativity and cosmology, he spent most of his life doing monotonous lab work.

It's a miracle to do such illustrious independent research work despite rigorous academic regulations for the university. His is an indelible contribution, path-breaking equation, and ways to discover under adverse and challenging circumstances. He attained this feat by the sheer virtue of self-learning.

The first mention of the term Raychaudhuri equation appeared in a research paper published in 1965. It hit the zenith of fame as it was a key tool in the hands of young relativists like Stephen Hawking and Roger Penrose in the middle of the late 1960s in their attempt to answer the question on the existence of space, time singularities and to explain the theory of the universe. AKR symbolized excellent scholarship and erudition. His biography was authored by V Narllikar and in 2005, a documentary film had been produced on his life and work. His research work is as consequential as it could have got. Hawking indeed admired Raychaudhuri's contributions to physics very much. His contributions are widely recognized by the International scientific community. But AKR remains a hidden figure in his homeland.

Variety is the Spice of Life

Ajay Gupta

B.A. (Hons.) History, First Year

Life is a journey where one travels and enjoys every moment. And since it is a journey, it could never be a monotonous one. It has ups and downs, which are indeed very challenging. Although everyone wishes for things to always be good, but if it were so, it'd be a straight road without any twist or turn, very boring. This world is a stage upon which the drama of life is performed by men and women. This drama is so gripping because the acts put up have a vibrancy to them. Light changes into darkness, childhood changes into old age. Life melds into oblivion, rosy lips and cheeks change into wrinkled faces. When a child is born, it must grow and learn. A child cannot remain a child forever. As time passes by, it brings variety to life.

Change has its thrill and delight. Look at nature. Does it not change every minute? The sun rises and sets. The sun scorches the earth and rain cools it down. Every second is unique. The change in the universe and nature is so sure and so consistent that night has to change into the day. Similarly, spices are of different flavors and they add to the taste of the food. Different flavors are used for different dishes. If the same spices are used for different dishes, the taste is lost. The variety of spices makes food more palatable and delicious. Thus, eating becomes a pleasure. What spices are to food, the variety is to life.

Monotony kills the pleasure of life. But a variety of scenes, people, places, food, clothing, art, and entertainment can make living a pleasure. Change brings happiness, and happiness makes people lively and cheerful. In life, there is always a change of conditions. One may be happy and the next second they may turn sad. For instance, when children study a particular subject over some time, they get bored. A good way to keep the child's interest up would be to introduce some variety. A picture book or a game that teaches the child while they play. The youth are probably the most active and are replete with energy. Because of their young age, they are adventurous and make a variety of decisions (both good and bad). Sometimes, the decisions which they make certainly show a new world to them. They travel a lot, they trek and many other activities, which helps them stay fit and healthy as well.

But learning a new activity is not just supposed to be fun. Just like a spice could ruin food if it is used in excess, the very same way, variety could ruin our lives if we started applying it indiscriminately. But, it is impossible to think of life in which there is no variety. Any action, however interesting at first, becomes monotonous in the long run. For example, a person wants to bring some changes in their life. First of all, they will adopt a new fashion. It is common human behavior to get attracted to new things and these innovations emerge from exploring things.

The crux of it all is that if people stop exploring ideas, then life will become stagnant and no thrill and excitement will remain in life. Variations are the only things that make life vibrant and worth living. So to make life attractive, some room or space should always be kept empty for variety or change. In other words, it should be welcomed in all its forms. Without change, nothing is beautiful. A river has to flow, it cannot be still. A tree has to grow, it cannot always be a sapling. Sorrow and happiness are like a wheel, one has to go up, and the other goes down. With variety and change, life would surely be more beautiful. (But remember to put limitations to moderate these adaptations of new behaviors, as that makes things all the more interesting, for were there to be free will, there would be no challenge!).

String Theory

Ankush Yadav

B.Sc. (Hons.) Electronics, First Year

In physics, String Theory is a theoretical framework in which point-like particles of particle physics are replaced by uni-dimensional objects called strings. The theory describes how these strings propagate through space and interact with each other. On a distance scale larger than the string scale, a string looks just like an ordinary particle, with its mass, charge, and other properties determined by the vibrational state of the string. In string theory, one of the many vibrational states of the string corresponds to the graviton, a quantum mechanical particle that carries gravitational force. Thus, string theory is a theory of quantum gravity.

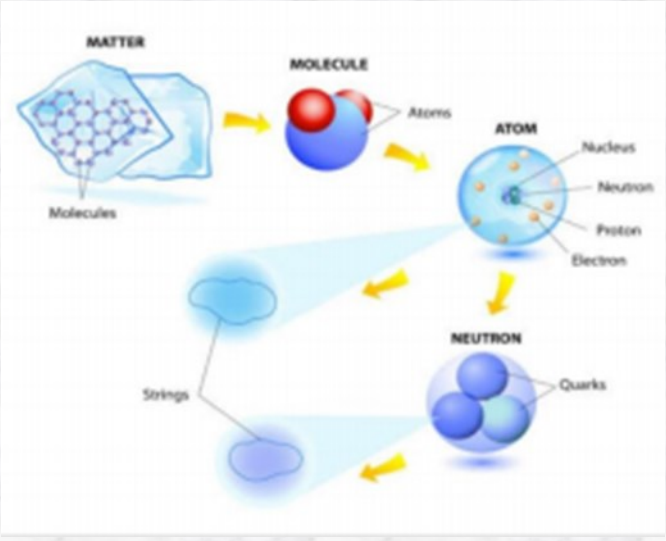

To understand it, let's pose the question: "What are mangoes made of?" To answer this question, scientists practiced poking deep into the mango, by magnifying what's inside. If we keep magnifying the insides of mango we will end up finding molecules. Interestingly, molecules or even the atoms we find further are not the end of the story. Any atom found is composed of particles like electrons, neutrons, and protons. If one of the neutrons is picked and magnified, we will discover that even neutrons are made from particles. If one of the particles is taken and magnified, it supports the conventional hypothesis that was formulated; inside the particle is nothing but strings. Ergo, this theory comes along and suggests that a particle is a vibrating string just like a string of a violin. Strings tweaked on the violin, in turn, produce some musical notes, however, in this case of particulate matter, these vibrations produce strings that form a particle. Henceforth it wouldn't be wrong to suggest that a neutron is nothing but a string vibrating in a different pattern while an electron is a string vibrating in another pattern.

Looking at the big picture, therefore, suggests that mango is nothing but a cosmic symphony, a group of vibrating strings.

My imagination about the behavior of the universe, as supported by the String Theory:

If we applied the String Theory at a universe level, I believe that a group of galaxies (here a group of galaxies implies the largest scale), containing billions of galaxies form a regular line. As we know that galaxies constantly move in the universe, it can be concluded that the line formed by the galaxy vibrates as well. Each galaxy acquires irregular motion, on whose behalf it can be formulated that each line formed by galaxies vibrates in a different pattern. Ergo, the universe is nothing but a cosmic symphony as well. The universe is one of the objects like a mango when understood with the string theory in mind.

Imagination is more important than knowledge.

School

Shaurya Sinha

B.A. (Hons.) Zoology, First Year

Down the luminous hallway lined with rough white walls,
murmurs from the students and teachers flowed from the classrooms.
At the end of the seemingly never-ending hall,
a bright red exit sign loomed over the cool stairwell.
Footsteps echoed as we made our way down.
Snow softly dusted down, creating a white hazed view of the world outside the window.
The halls now littered with artwork hung on the walls.
The smell of wood floats about.
Music and machines mix overlaying the hushed voices.
Down the opposing hall, burnt coffee and the rattling of the kitchen fill the space
as footsteps bounce from wall to wall.
The white lights shine off trophies
Screams and squeaks, muted by the walls, sound through this hall.
Hums from the dripping fountain mask the voices
leaving them to be nothing but whispers.

Hope Stands in Front of Me

Astitva Singh

B.A. (Hons.) English, First Year

Yesterday, was just a day
My wants are still far away
as I bounce back to my past,
It seems black, yet vast

Hope, stands in front of me,
I dwell in my dreams that are flying free
Bad are those people who prick you,
You can't question my endeavor

Little, tittle, I jump around,
daydreaming, still a reality,
Hope stands in front of me,
These nazis will surely set me free

The future is too uncertain,
Present a contradiction,
I'll continue to see sunrise and sunset,
as they say, every day is a new day

You can't vanish my dreams,
You can't force me to dream,
Still, I'll say, this Hope stands in front of me,
My feathers will open to set me free

The Mind

Khushi Sharma

B.A. (Hons.) Philosophy, First Year

Beyond the limitations of the seen,
I can be explored only in the unseen.
The time gave birth to me
And so I floated by in the forbidden past and the awaited future
Beyond the confinements of physicality

Neither death can kill me,
Nor can birth ever give life to me.
I have existed as a universal reality for centuries
Logic has never bound me with its practicality
For I had always rested upon the possibilities of different uncertainties
The illusion has always been a companion
Walking on a path fighting against the enemy of reality

I was never born with a desire,
But I gave birth to many
Generations of men have died for desires
While others have revived itA disembodied me had assured its supremacy
Over the posterities and their legacy.

Angels and Devils have always been a part of me
Dwelling like two different shores of a vast sea
Angels and Devils may have been a part of me
But it has always been reflected as existence of yours

I was manifested with an intent of destruction in a dimension beyond reality
So I, the mind, being honest and fair
Leave the shore upon you to be chosen
But I the mind, beware the whole humankind
That the truth had never falsified me
But it can bound you with its morality
And so be the human on the side of truth, like an angel
Because on the other side of it
You are a devil

The End

Abhir Khanna

B.A. (Prog.) Commerce and Economics, Second Year

Life started as a little child
Everything seemed like such a delight
But as the years passed by

I had just one fright in my mind
What will happen in the end?
Will I do good deeds and depart for heaven
Or will I plummet to hell

But little did I know
People don't always deserve what they get
Life isn't fair, I wonder in despair

The inevitable end
Lots of tears are shed
Will be taken away by the angel of death

So relish every moment
And live it to the fullest
Spend a life that you won't regret

Anxiety

Abhir Khanna

B.A. (Prog.) Commerce and Economics,
Second Year

Lying on my bed curled up
Feeling Breathless

Worrying about everything
Not wanting to do anything

Voices in my head mock me I'm not good enough
I say to them "who are you to tell me what I'm capable of"

They laugh at every failure of mine
Always make me feel that I'm losing my mind

Makes me turn on my loved ones
Like they have control over my emotions

But they drive me to try harder
So that I can move them farther

Memories

Abhir Khanna

B.A. (Prog.) Commerce and Economics,
Second Year

Remembering days from the past
Lots of friends lost in the path
Some were close, some were not

We played from dusks till nights
There were no worries in our minds
Those were happier times

Going on vacations
Full of exhilarations
Life was simpler then

I wish the good ones lasted longer
And the bad ones didn't ponder
Those moments will be remembered forever

Racism

Abhir Khanna

B.A. (Prog.) Commerce and Economics,
Second Year

This confuses me in my mind
All of us are the same inside
But why is humanity so hard to find?

People among us are apartheid
When respect should be our birthright
Such things make me so affright

Dark-skinned people considered inferior
Judged on the basis of skin color
Making them feel duller

Black, brown, or white
Every person is an amazing sight
No one should have to fight for an equal right

Sun brings out the best in me

Abhir Khanna

B.A. (Prog.) Commerce and Economics, Second Year

A shine so bright in the sky
That blinds my eye

Sun tells me I can achieve anything
All my dreams will come falling

It gives me the strength to overcome fear
Makes all my worries disappear

A shine so bright in the sky
That makes me want to cry with joy

The morning sky sings to me
That It will always be here for me

I gaze up in the sky when it comes and goes
It's my best friend in all my highs and lows

Kindness

Abhir Khanna

B.A. (Prog.) Commerce and Economics, Second Year

Kindness makes people warm, gives them hope
Turns them into good folk

People mistreating all and sundry
Makes a sigh come out of me

I wish the whole world was kind
Everyone was in their right mind

So they could differ between wrong and right
Then the whole world would be a better sight

Who Am I ?

Shaurya Sinha,

B.A. (Hons.) Zoology, First Year

I'm the nameless nobody
Born of a nameless, nonexistent mum
And a nameless, nonexistent dad
In a placeless city
New in town and I don't mind
To re-shape my mind
By a town that is so fascinating,
So bustling and -
Maybe
I am feeble
But certainly in a new form
A new coming storm,
A cyclone,
A cyclops,
A mongrel
Annihilating,
Devastating,
Decapitating your approval and pity
I'm glass, seen through and sharp
An undeciphered writing
Meticulously weird and uncanny
I'm a boy, a girl
A maniac,
A brainiac,
A pyromaniac,
A junior granny
It's funny
Wondering why I'm the way I am
You sculptor -
I'm leaving,
Somewhere where I will not find you

Vacillating

Vriti

B.Sc. (Hons.) Life Sciences, First Year

Under the strange grey sky, stretching far and wide
I see little flakes the color of snow
Abundant, pure, screaming with silence
Laying down the stretch ahead
An untouched path- far and wide
Tempting all who see with the things that could be
Taking a breath,
I stand and feel

There are people around, walking their paths,
Circles and cross-sections and loops
Some are happily looking- like a bystander to their own play,
some crushing themselves with their own weight
(Accepting or forgiving- what's more difficult?)
The worst, the ones walking by unaware
With their heads dreaming of the road they're walking on right now
Noticing everyone,
I stand and feel

It's soon my turn
Standing on the edge of the next great adventure
I look back at the path I left- beautifully ugly, progressive, and mine...
And in front is a spotless sheet tempting me to make my mark
I just stand and feel

I remember the people I looked up to, shivering and rubbing their hands
From the haunting cold of the days gone by,
Yet still searching for dry wood amid snow
Cutting the trees that housed them for a reprieve
I stand and feel

I feel the winds blowing, informing me of the rushing time
I feel the cold settling-in in my aching hands
Yet I feel the warmth
My feet itching with restlessness
Wanting to play on the road ahead;
Holding- fearlessly molding, the ice and the crunching leaves
Hearing the sounds- happy and sad and everything in between...
I stand and feel

I open the bag I hold- both of us carrying each other
And I feel the warmth changing to quiet resolve
With the white fog forming the clouds,
I take out the items one by one- throwing the dragging weight
Finally, I minimize the things I refuse to part with
Attaching them to a bracelet on my wrist- never holding me down, there, for every decision I make.
A sigh
I stand and feel.

Everything's done now
No reason to stand anymore
Feeling lost, I search
For the person there with me all my life,
My Northern Star,
A soft breath
"Let's go"

The leaves crunching and the aches settling,
I take my first step;
Staring straight ahead.
This time
I don't stand and feel-
I go.

To 2021, A Ray of Hope

Ifrah Sadaf

B.Sc. (Prog.) Life Sciences, First Year

Bidding goodbye to a year that taught us a lot,
It has been the worst year, that's all I thought
But now when I sit and wonder,
It occurs to me that it was more than just a blunder
I believe,
It made me grow,
Taught me to just go with the flow,
Become a better person,
Maybe, a good listener,
Maybe, a better friend,
Maybe something more,
But taught me to face things as they come
As I now enter 2021,
I feel like a war ended, which I just won
Now all I do is hope for the best,
And turn to the almighty for the rest
I want to enjoy and cherish each moment of this year,
Please be good to me, 2020 dear
I hope and pray things soon get into place,
And I can go back to living a normal life, and all my dreams and wishes I can chase.

Here to Bloom

Krishna Mishra

B. A. (Hons.) Economics, Second Year

Is not my body as precious as yours?
Am I not valuable as a sister of yours?
Don't let think my smile misspell
I am an Architect, a Destroyer as well

Don't let libido, make your conscience blind!
Hell! eroticism cannot make the real man un-kind
Be a man.. with love, faith, and a kind mind

Rape, the only crime in this hell
Raped is the culprit, Rapists are victims in jewel!!!

Listen, I am not a commodity to consume...
I, Not a machine, but here to bloom!
Here to bloom, Here to bloom!!

Life Goes On

Shaurya Sinha

B.A. (Hons.) Zoology, First Year

It happened when my father
Was posted on top of a hill,
Where life was never low.
Below the hill a vast lake did flow
And our favorite pastime was to row
Sometimes the cold wind did blow
But soon after the sun showed,
Our school was on another hilltop
Where many frogs did hop.
Life was beautiful, we enjoyed all-day
All who were unique in our behavior, today

But once while in the classroom
We realized that the earth under us just shook
And we realized that an earthquake was the cause of the gloom
It buried all our books
People ran helter-skelter
But there was this young boy who got stuck under a shelter

I decided to save the life of the kid
And to do this good deed
With all my force I pulled him up
And he gave me a big hug
I don't know why but tears rolled over my eyes
Maybe because I did something wise
And saved a young life

After all this, things did fall back in place

The Humankind

Muskan Rafiq

B.Sc. (Hons.) Life Sciences, Second year

We humans,
We have come a long way
To get where we are today
Looking back it's hard to believe
What we have achieved
What drives us forward?
What spurs us on?
It's our insatiable need to learn and know,
To do and grow
To twiddle and tweaks and 2.0

We, humans, are never satisfied.
We have made monuments
And cut through continents
Master human flights
Sent up satellites
Walked in outer space
Created user interface
Built cities on sand
Turned sea into land

And yet, we are not done.
We made levitating trains
And open-world games.
Constructed super towers
And grids for solar power
Made houses smart
Turned food into art
Built self-driving cars
And taught robots to play guitar

But no,
We are not done
We found cures for disease
Performed symphonies.
Probed the ocean floor
Made machines to do our chores
Deconstructed quarks
Studied great white sharks
Sequenced our genomes
And even 3D-printed homes.

But are we done yet?
Oh on...!
We are not done
We need to do more than ever before
Our planet needs help
And there are challenges that we can't ignore

But remember,
We are Humankind
No job is too big if we set our mind
If we all embrace the spirit that there is no limit
If we rise to this occasion and come together across the nation
If we integrate and ideate,
We can make the future great

The Final Moments

KenAgam Bagra

English Hons. First year

"In the final moments before I die,
And my whole life flashes by,
I wonder what I would see.
And will what I see make me happy?

Would I remember my mother's kiss?
And die with my heart at peace.
Would I see the love my father never showed?
Would I die knowing I was loved?

Would I be filled with regrets?
Or accept the mistakes I make?
Would have I lived my fill,
Or yearn for more time still?"

Save and Be Brave!

Honey Sharma

B.Sc. Mathematics Hons., Second year

Save, save, save
And be brave!

Save the precious resources,
Which you too waste
And then your precious life
Is just like a damaged knife.

Save the precious water
to save your life.
As without water
There is no life.

Save the greeny plants & trees
to save your life.
Don't cut the trees,
remove deforestation from your life.

Plants play a crucial
role in our life,
Releasing of oxygen,
absorption of Carbon-dioxide.

Don't throw garbage here & there,
Use always paper bags and share,
Switch off lights when nobody is there,
These are few good ways to live with care.

Plant the trees everywhere
Save electricity, water, and care.
Create a colorful & beautiful nature
Make for yourself a bright future.

Save, save, save
And be brave!

God & Equality

Honey Sharma

B.Sc. Mathematics Hons., Second year

Temple has 6 letters
And Geeta has 5.
Mosque has 6 letters
And the Quran has 5.
Church has 6 letters
And the Bible has 5.
You will get 1 word
From 6 if you subtract 5
And the word is "One"
Which depicts "God is One"
Hindu, Muslim, Sikh, Christian
Nothing we are.
God is our master
His servants we are

God is the gardener
And flowers we are.
We get blessings equally
And "Equal" we are

HANSRAJ COLLEGE

UNIVERSITY OF DELHI

Tel: 011-27667458, 27667747 , Fax: 011-27666338
Email: principal_hrc@yahoo.com
Website: www.hansrajcollege.ac.in